चन्दामामा
अक्तूबर १९७७

"डॉली,
पहले सफाई...
और तब हम फिर
खेलेंगे!"
पेश है
अन्तरराष्ट्रीय स्तरके
सैनिटरीवेयर और
वॉल टाइल्स
VITREOUS
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
सबसे ज्यादा बिकने वाले और सबसे ज्यादा निर्यात किये जाने वाले भारतीय स्नानगृह उपकरणों के निर्माता
सोमानी-पिल्किंगटन्स् लिमिटेड

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ?
3 5 12 8
4 7 14 5
2 9 ? 10
Cadbury's MILK CHOCOLATE GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेज़ी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मज़ा" डिपार्टमेंट E-21
पोस्ट बॉक्स नं. ४६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
31-10-1977
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-69 HIN
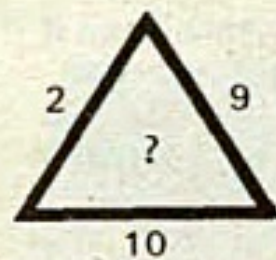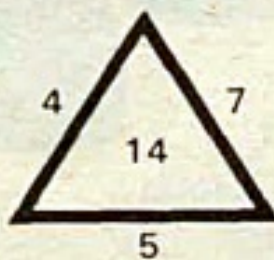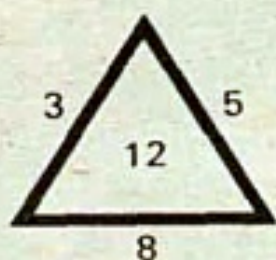
छोटी छोटी चिल्लर से भी आपकी जिंदगी बदल सकती है

जब आप रुपयों के हिसाब किताब में लगे रहते हैं तो पता ही नहीं चलता कि छोटी चिल्लर कब कहां निकल भागी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है; कि ५, १० और २५ पैसे के यही छोटे छोटे सिक्के, यही चिल्लर जो घर खर्च के बजेट में से बाकी रह जाती है, आपकी बड़ी बचत बन सकती है।

बालक्षेमा जमा योजना ऐसी ही योजना है जिसमें छोटे पैमाने की बचत कुछ ही समय में विशाल हो जाती है.

अपने बच्चों को बचत का महत्त्व हिसाब सिखाइये उन छोटे छोटे खुबसूरत बक्सों में, जो हम छोटी जमा योजना के लिए देते हैं, पैसे डाल कर वे खुश होंगे. **बालक्षेमा** योजना का एजेंट इन बक्सों की चाभी लेकर खुद आपके घर आयेगा और बचत का यह पैसा, रसीद देकर बैंक ले जायेगा.

और फिर, कुछ समय बाद आप यह देख हैरत में रह जायेंगे कि छोटी छोटी चिल्लर से की गयी बचत कितनी बड़ी हो गयी है.

बालक्षेमा
जमा योजना

maa CB HIN 2 A

केवल ओडोमॉस ही दो तरह से आपकी निश्चित सुरक्षा करता है, मच्छरों को दूर भगाकर...

रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा को एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये

ओडोमॉस

की सुरक्षा पाइये!

चन्दामामा

अक्तूबर १९७७

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI. CHANDAMAMA is published monthly and distributed in U.S.A. by Chandamama Distributors, West Chester PA 19380. Subscription 1 year $ 6-50. Second Class Postage paid at West Chester, PA.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "दार्शनिक ज्ञान" का आधार 'वसुंधरा' की कहानी है। ब्रह्म ज्ञान, तत्व ज्ञान तथा दार्शनिक ज्ञान ऐसे ही व्यक्तियों के लिए अनुकूल हो सकते हैं जिनके सामने कोई समस्याएँ नहीं होतीं, पर जो लोग प्रति नित्य ऐहिक समस्याओं में उलझे रहते हैं, उनके लिए बेकार हैं। ऐसे सिद्धांतों का जन साधारण में प्रचार करने से उनका लौकिक जीवन पंगु हो जाता है। इससे भी विचित्र बात तो यह है कि यह दार्शनिक ज्ञान जो दूसरों को उपदेश देते हैं, उनके लिए उपयोगी अन्य ज्ञान कुछ भी नहीं होता। यही नीति हम इस कहानी में पाते हैं।

वर्ष : ३० अक्तूबर १९७७ अंक : २

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

धर्मात् प्रच्युत शीलम्ही,
पुरुषम् पाप निश्चयम्
त्वक्त्वा सुख मवा प्नोति
हस्ता दाशीविषम् यथा ॥ १ ॥

[धर्मच्युत व्यक्ति तथा पाप करने का निश्चय करनेवाले को त्यागने में ऐसा सुख प्राप्त होता है जैसे हाथ में लिपटे विष सर्प को त्यागने में सुख मिलता है ।]

हिंसा, परस्व हरणे,
पर दारा भि मर्शनम्
त्याज्य माहु र्दुराचारम्
वेश्म प्रज्वलितम् यथा ॥ २ ॥

[हिंसा करनेवाले व्यक्ति को, दूसरों की संपत्ति का अपहरण करनेवाले को तथा पर नारी का गमन करनेवाले दुराचारी को तुरंत इस तरह त्यागना चाहिए जैसे जलनेवाले गृह को त्यागा जाता है ।]

पर स्वानाम् च हरणम्
परदारा भिमर्शनम्
सुहृदा मति शंकांच
प्रयो दोषाः क्षयावहाः ॥ ३ ॥

[दूसरों के धन का अपहरण करना, पर नारियों को पाना तथा मित्रों का अपमान करना ये तीनों गुण विनाश के कारणभूत हैं ।]

दुर्गुण

काकोलूकीयम

[५१]

दुष्ट मार्जाल की बातों पर विश्वास करके मूर्ख खरगोश और तीतर उसके निकट पहुँचे। मार्जाल एक साथ दोनों पर टूट पड़ा। एक को अपने पंजे से दे मारा और दूसरे को अपने तेज दाढ़ों से कसकर पकड़कर खा डाला।

कौए ने यह कहानी सुनाकर यों कहा– "दिवांध उल्लू को तुम लोगों ने राजा बनाया, इसलिए रात को आँखें न दीखने वाले तुम लोग इसी प्रकार विनाश को प्राप्त होगे। इसलिए सोच-समझकर अपने कर्तव्य का निर्णय कर लो।"

ये बातें सुनकर पक्षियों ने सोचा–'कौए का कहना सच है। हम पुनः एक बार सभा बुलाकर यह निर्णय कर लेंगे कि हमारा राजा कौन हों?' यों सोचकर सब पक्षी अपने अपने निवास को उड़ चले।

इस पर उल्लू की पत्नी ने कहा– "प्रियतम, तुम्हारे राज्याभिषेक को कौए ने बिगाड़ दिया। सारे पक्षी अपने अपने रास्ते चले गये हैं। न मालूम क्यों, कौआ अकेला यहीं पर है। अब उठो, तुम को मैं घर पहुँचा देती हूँ।"

ये बातें सुन उल्लू चिंतापूर्ण स्वर में कौए से बोला–"हे दुष्ट कौआ! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जिसके वास्ते तुमने मेरे राज्याभिषेक का भंग कर दिया? आज से तुम्हारी तथा मेरी जाति के बीच गहरी दुश्मनी होगी! काटा गया जंगल भी वर्षा होने पर पुनः उग सकता है, उसमें हरियाली आ जाती है। मगर कठिन वचनों के घाव कभी भर नहीं सकते!" यों कहकर वह अपनी पत्नी के साथ अपने निवास को चला गाया।

उपाय जानने के कारण विष-पान करता है? बुद्धिमान को चाहिए कि समाज के बीच दूसरों का अपमान कदापि नहीं करना चाहिए।"

यों सोचते कौआ अपने निवास को चला गया।

उल्लू के राज्याभिषेक के बिगड़ने का समाचार सुनकर कौओं का राजा मेघवर्ण दुखी स्वर में बोला–"उफ़! यह तो अपनी जाति के लिए भयंकर शत्रुता का कारण बन गया है। क्या राजनीति की चतुरता या प्रवंचना का प्रयोग करके अक़्लमंद उल्लुओं के साथ फिर दोस्ती करना संभव नहीं है?"

"क्यों नहीं? कुछ कमबख़्त चोरों ने दगा देकर अक़्लमंद ब्राह्मण की बकरी को हड़पने की कहानी क्या आप ने नहीं सुनी?" स्थिरजीवी ने पूछा।

"वह कैसी कहानी है?" मेघवर्ण ने पूछा। इस पर स्थिरजीवी ने ब्राह्मण की बकरी की कहानी यों सुनाई:

मित्रवर्मा नामक ब्राह्मण अत्यंत निष्ठावान व्यक्ति था। माघ का महीना था। ठण्डी हवा चल रही थी। आसमान में बादल घुमड़ रहे थे, बूंदा-बूंदी हो रही थी। ऐसे समय में ब्राह्मण ने यज्ञ करना चाहा। यज्ञ के समय बलि देने के लिए एक बकरी

इस पर कौआ यों सोचने लगा: 'ओह! आज मैंने नाहक़ कठिन वचन बोलकर दुश्मनी मोल ली है। कहा जाता है कि स्थान, समय व परिस्थिति का ख़्याल किये बिना जो अंट-संट बातें कही जाती हैं, तिस पर भी दूसरों के दिल को दुखानेवाली बातें अथवा बोलनेवाले की नीच प्रकृति को व्यक्त करनेवाली बातें साधारण नहीं होतीं, बल्कि गहरे विष से बुझी बातें कही जाती हैं। चाहे कोई बड़ा ही शक्तिशाली तथा विवेकशील व्यक्ति ही क्यों न हो, उसे भी किसी हालत में जान-बूझकर शत्रुओं को मोल लेना नहीं चाहिए। क्या विवेकशील व्यक्ति विष के प्रभाव को कम करने का

प्राप्त करने के विचार से वह ब्राह्मण दूर के एक गाँव में गया और वहाँ के एक धनी सज्जन से बोला–"महाशय! मैं अगली अमावास्या के दिन एक यज्ञ के हेतु एक बकरी की बलि देना चाहता हूँ। कृपया मुझे एक बकरी दिला दीजिए।" इस पर धनी ने ब्राह्मण को एक मोटी-ताजी बकरी दे दी।

ब्राह्मण उस बकरी को अपने साथ ले जाना चाहता था, पर वह नये व्यक्ति को देख बिगड़ उठी, इधर-उधर भागने लगी। ब्राह्मण ने बड़ी मुश्किल से बकरी को पकड़ लिया, फिर से वह भाग न जाय, इस ख्याल से कंधे पर डालकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

वह बकरी बचकर भागने को छटपटाने लगी। इसे तीन गरीब चोरों ने देख लिया। वे भूख से परेशान थे। उन लोगों ने आपस में यों सोचा–"हम अगर इस बकरी को खा सके तो जाड़े की मार से बच सकते हैं। इसलिए हम इस पागल ब्राह्मण को धोखा देंगे।" तीनों ने उसी जगह अपनी योजना बनाई और अलग-अलग रास्तों पर चले गये।

ब्राह्मण थोड़ी ही दूर जा पाया था कि एक चोर किसान के वेष में ब्राह्मण के सामने आया और बोला–"महाशय, आप इस खाजवाले कुत्ते को कंधे पर क्यों ढोते जा रहे हैं? कोई देख ले तो न मालूम क्या सोचेगा? बुजुर्ग लोग कहा करते हैं न कि कुत्ता, मुर्गी और चाण्डाल अछूत होते हैं। ऐसी हालत में आप जैसे निष्ठावान ब्राह्मण को तो इन्हें छूने तक नहीं चाहिए न?"

ब्राह्मण ने गुस्से में आकर कहा–"अबे, तुम बकरी को कुत्ता बताते हो? क्या तुम्हारी आँखें दिखाई नहीं देतीं?"

"महाशय, आप नाहक़ नाराज़ क्यों होते हैं? यदि आप को कोई आपत्ति न हो तो इस कुत्ते को ढोकर लेते जाइए! मेरा क्या बिगड़ता है?" यों कहकर चोर चला गया।

१८९. प्राचीन सिरिया का मंदिर

सिरिया के बल्बेक के पास स्थित यह अत्यंत प्राचीन 'बाकस' मंदिर सबसे ज्यादा सुंदर तथा कम उजड़ा हुआ है। इस मंदिर के अति निकट तक 'क्रूसेडरों' ने हमला किया, पर इसे नष्ट नहीं किया।

माया सरोवर

[२१]

[जयशील अपने प्रबल शत्रु कृपाणजित के मृत्यु-भक्षी वृक्ष के बलि होते ही सिद्ध साधक के साथ माया सरोवर की खोज में चल पडा। सर्पनख ने भी उनका अनुसरण किया। एक गुफा में से बाहर निकलनेवाले नर वानर को जलग्रह ने अपनी सूंड से कस लिया। इसे तीनों ने देखा। बाद...]

जलग्रह को देखते ही जयशील एवं सिद्ध साधक के साथ सर्पनख भी विस्मय में आ गया। वह जलाश्व से उतरने को था, पर रुककर बोला—"जयशील और सिद्ध साधक! जलग्रह नामक वह पानी का हाथी अत्यंत शक्तिशाली मकरकेतु का वाहन है। वह माया सरोवरेश्वर के द्वारा 'सेवक श्रेष्ठ' नामक उपाधि प्राप्त महानुभाव है।"

सर्पनख के मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि सिद्ध साधक "जय महाकाल की!" चिल्लाते शूल उठाकर बोला—"अरे जल प्राणी! अब अपना मुँह बंद कर लो। हम जानते हैं कि मकरकेतु कैसा शक्तिशाली है। मेरा वाहन बननेवाले नरवानर को मारने का प्रयत्न करनेवाले इस जलग्रह का मैं सर्व प्रथम वध कर डालूंगा, इसके बाद में उसके मालिक को भी

महाकाल की बलि देने जा रहा हूँ।" यों कहकर वह गुफा की ओर दौड़ने को हुआ।

"सिद्ध साधक! जल्दबाजी न करो।" इन शब्दों के साथ जयशील ने सिद्ध साधक को रोका, इसके बाद अपने वाहन जलाश्व को उसके सामने ले जाकर धीमी आवाज़ में बोला-"सिद्ध साधक! हमें माया सरोवर तक पहुँचने का अब बढ़िया मौक़ा हाथ लगने जा रहा है। मकरकेतु के साथ मीठी बातें करके उसके द्वारा राजा कनकाक्ष के बच्चों का अपहरण करनेवाले माया सरोवरेश्वर तक हमें किसी न किसी उपाय से पहुँच जाना होगा। तुम एक दम शांत हो जाओ।"

सिद्ध साधक ने अपने शूल को उतारकर कहा-"इस बात का क्या भरोसा है कि मकरकेतु अभी तक ज़िंदा है? उसकी बगल में एक छुरी धंस गई थी और बहेलिये का बाण उसके कंधे में धंस गया था। इसलिए मेरे विचार से उन ज़बर्दस्त घावों के कारण वह कभी का मर गया होगा। यह जलग्रह अपने मालिक को खोकर इन पहाड़ों तथा जंगलों में स्वेच्छा पूर्वक विचरण करता होगा।"

जयशील तथा सिद्ध साधक यों बातचीत कर ही रहे थे कि उधर पहाड़ पर जलग्रह तथा नर वानह गुफा के सामने स्थित मैदान में भयंकर रूप से गरजते लड़ रहे थे। हाथी की सूंड की पकड़ से बचकर नर वानर उस पर उछल पड़ा, अपने तेज दाढ़ों से हाथी का कुंभ स्थल चीरते, अपने हाथों से बुरी तरह से पीट रहा था। हाथी ने नर वानर को अपनी सूंड से पकड़कर नीचे पटक दिया और अपने पैरों से कुचल-कुचलकर उसे मारने का प्रयत्न करने लगा।

"सिद्ध साधक! ये दोनों दुष्ट मृग एक से एक बढ़कर हैं। इसलिए हम यह क्यों सोचे कि मकरकेतु शायद मर गया होगा। लो, देखो! गुफा के ऊपर शिलाओं के पास एक-दो नहीं, बल्कि चार आदमी

खड़े हो इस भयंकर लड़ाई को विस्मय पूर्वक देख रहे हैं।" जयशील ने कहा।

सिद्ध साधक ने गुफा के ऊपर अपनी दृष्टि दौड़ाई। जयशील के कथनानुसार वहाँ पर चार आदमी खड़े थे। उन चारों की वेष-भूषा के आधार पर सिद्ध साधक केवल मकरकेतु को ही पहचान पाया। मगर वहाँ पर स्थित दो और व्यक्तियों ने जयशील को पहचान लिया। फिर भी उनमें से एक व्यक्ति विस्मय के साथ और दूसरा भय के मारे उनकी ओर देखता ही रह गया।

मकरकेतु ने सब की ओर एक बार दृष्टि दौड़ाई, फिर अपनी देह पर शाल ओढ़े, काली व छोटी दाढ़ीवाले तथा हीरे जड़ित सोने की टोपवाली लाठी धारण किये हुए व्यक्ति से बोला—"वैद्यदेव! जलाश्व पर बैठा हुआ युवक ही जयशील है। शूल धारण कर जमीन पर खड़ा हुआ व्यक्ति सिद्ध साधक है। तीसरे व्यक्ति को तो आप जानते ही हैं, वह मेरे अनुचरों में से एक है—इस सर्पस्वर का भाई है।"

"मैंने नहीं सोचा था कि मैं अपने जीवन काल में अपने बड़े भाई को जीवित देख सकूंगा।" ये शब्द कहते सर्पस्वर आगे बढ़ने को हुआ, इस पर मकरकेतु ने क्रुद्ध हो उसका हाथ पकड़कर पीछे की ओर खींच डाला।

"अरे सर्पस्वर! तुम्हारा दिमाग खराब तो नहीं हो गया है? जयशील और सिद्ध साधक दोनों हमारे शत्रु हैं, फिर भी माया सरोवरेश्वर के आदेशानुसार हमें उनके साथ मित्रता का कपट अभिनय करना होगा। इसके वास्ते हमें कोई योजना बनानी है।" यों कहकर सर्पस्वर को डांट बैठा, तब हीरे जड़ित लाठी धारण किये हुए व्यक्ति से बोला—"वैद्यदेव! अभी तक आप ने इस संबंध में अपना विचार प्रकट नहीं किया है?" वैद्यदेव ने पहाड़ी तलहटी की ओर विस्मयपूर्वक देखते हुए

कहा—"मकरकेतु, लगता है, तुमने मैदान में होनेवाली घटना पर ध्यान नहीं दिया है। जयशील की तलवार का वार खाकर तुम्हारा जलग्रह प्राण त्यागने जा रहा है।"

मकरकेतु मैदान की ओर दृष्टि दौड़ाकर चिल्ला उठा—"हे मेरे माया सरोवरेश्वर!" फिर जल्दी जल्दी डग भरते पहाड़ पर से उतरने लगा। उसके पीछे अन्य लोग भी चल पड़े। उनमें पच्चीस साल का एक युवक भी था। वह लंगड़ा था, पर उसका दायाँ पैर लकड़ी का बना था। वह एक मोटी लकड़ी की मदद से धीरे से पहाड़ उतरने लगा।

सिद्ध साधक ने भांप लिया कि वह जिस नर वानर को अपना वाहन बनाना चाहता था, वह जलग्रह के हमले से घबराकर भागने की कोशिश कर रहा है, तब वह शूल उठाकर मैदान की ओर चल पड़ा। जयशील ने उसे सचेत करते हुए कहा—"सिद्ध साधक! इस वक़्त हमें मकरकेतु के साथ साथ उसके पीछे आनेवाले और तीन व्यक्तियों का सामना करना होगा! इसलिए तुम अत्यंत सावधान रहो।"

"जयशील! हमें इस दुनिया के किसी भी व्यक्ति से डरने की जरूरत नहीं है। साक्षात महाकाल के अनुचर के द्वारा प्राप्त महिमा समन्वित तलवार तुम्हारे हाथ है। अब मेरे शूल की ताक़त का बयान करने की कोई ज़रूरत ही नहीं है।" सिद्धसाधक ने कहा।

सर्पनख उनके पीछे जलाश्व पर चलते हुए चिल्ला उठा—"महाशयो, आप लोग नर वानर का वध कीजिए! पर जलग्रह की कोई हानि न कीजिएगा! क्योंकि उसका मालिक अत्यंत पौरुषवान तथा महासत्व है!"

"तुम जिसे महासत्व बताते हो, उसे मैं अपने शूल में चुभोकर उसका चमड़ा निकालने जा रहा हूँ; समझे! अब अपना मुँह बंद कर लो।" यों समझाकर दाँत

पीसते सिद्ध साधक चिल्ला उठा—"जय, महाकाल की!" तब तेजी से वह आगे की ओर दौड़ पड़ा।

सिद्ध साधक लड़नेवाले जानवरों के समीप पहुँचने ही जा रहा था, इस बीच जयशील अपने जलाश्व पर वहाँ गया। नर वानर जमीन पर चित पड़ा हुआ था और जलग्रह अपनी सूंड से उसे कसने जा रहा था, तभी जयशील ने उसकी सूंड पर तलवार की मूठ से वार किया। चोट खाकर जलग्रह पीड़ा के मारे चींकार करके जयशील पर आक्रमण करने को हुआ। जयशील ने शीघ्र गति से जलाश्व को पीछे की ओर हटाया और उछलकर जलग्रह पर कूद पड़ा।

इस पर जलग्रह अपने दुश्मन नर वानर की पकड़ ढीली करके जयशील को अपनी सूंड से नीचे गिराने की कोशिश में लग गया। जयशील ने बायें हाथ से उसकी सूंड पकड़कर दायें हाथ से उसके कुंभस्थल पर तलवार की मूठ का प्रहार करना प्रारंभ किया।

तब तक मकरकेतु वहाँ पर दौड़कर आया। उसे देखते ही जयशील बोला—"मकरकेतु, मैं पहले तुम्हारे जलग्रह का संहार करके तब तुम्हारा काम तमाम कर डालूंगा। तुम्हारी ही वजह से मैं और मेरा साथी सिद्ध साधक अकारण ही इन जंगलों में नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं।"
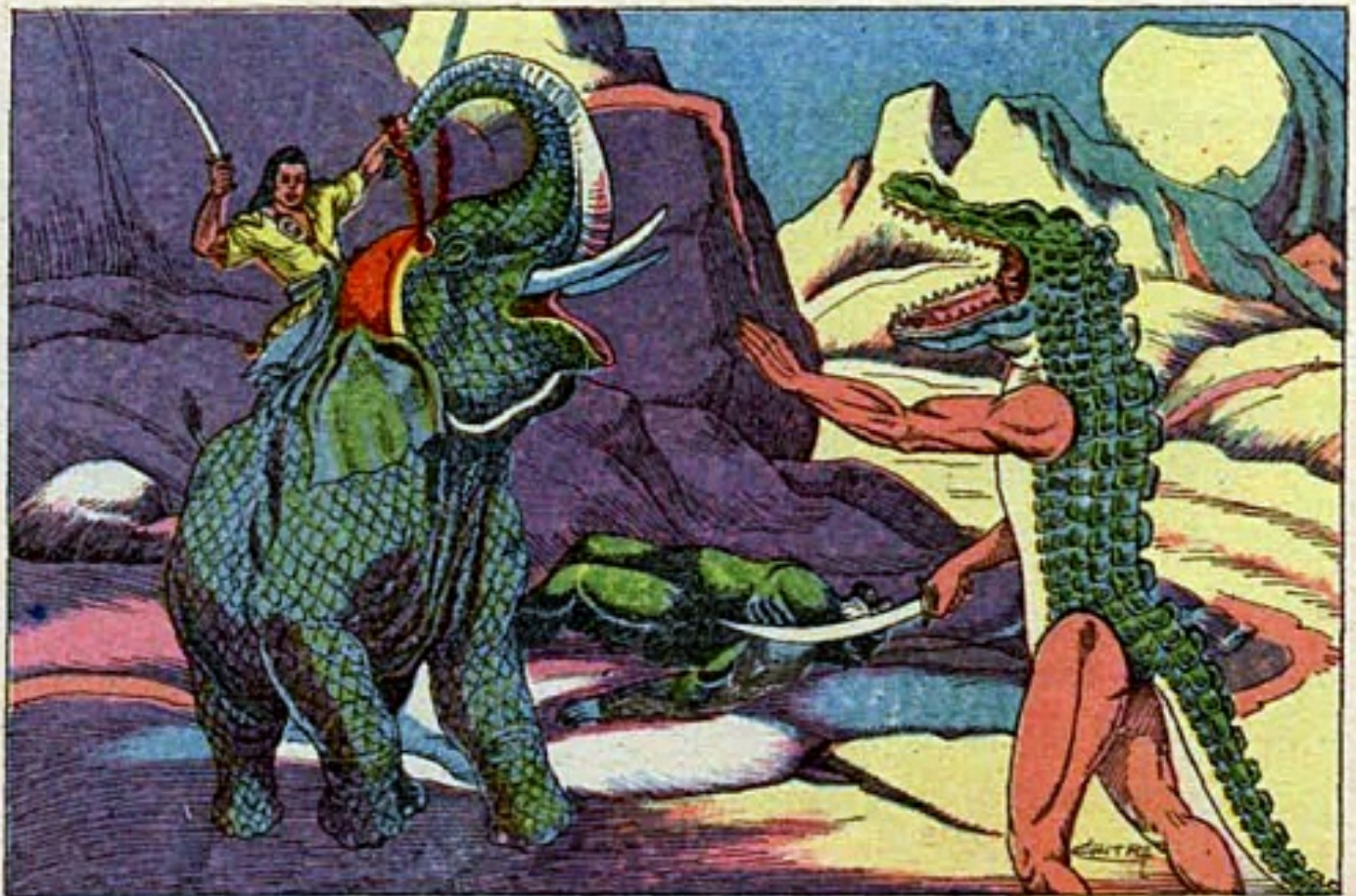
"जयशील! तुम्हारा पुण्य होगा! तुम जलग्रह का वध न करो! हम लोग इस पल से मित्र हैं! तुम तो माया सरोवर तक पहुँच जाना चाहते हो न? मैं उसका रास्ता बतला दूंगा।" मकरकेतु ने विनयपूर्ण स्वर में कहा।

ये बातें सुनते ही जयशील जलग्रह पर से झट से नीचे कूद पड़ा और बोला-"मैं न केवल माया सरोवर का रास्ता जानना चाहता हूँ, बल्कि वहाँ पर बन्दी बनाये गये राजा कनकाक्ष के पुत्र व पुत्री को भी बंधनों से मुक्त कराना चाहता हूँ। इसके वास्ते तुम्हें यहाँ पर किसी गुफा में बन्दी बनाकर तुम्हारे साथियों के द्वारा तुम्हारे प्रभु माया सरोवरेश्वर को खबर कर देना क्या उचित होगा?"

मकरकेतु जवाब देने जा रहा था, इसके पूर्व ही सिद्ध साधक चिल्ला उठा-"महा काल की जय!" फिर बोला-"जयशील! तुमने जो सोचा, बिलकुल ही ठीक है। यह भाग न जाय, इसके वास्ते इसका कंठ आधा काट डालो और इसके हाथ-पैर बांधकर गुफा में डाल दो। इसके तीनों दोस्तों को बाद को नर वानर ना आहार बना डालेंगे।" इसके बाद उसने नर वानर के कलेजे के पास कान ले जाकर उसकी नाड़ी की जाँच की, तब कहा-"अभी यह मरा नहीं है! इसका दिल धड़क रहा है! जलग्रह के प्रहारों से यह सिर्फ़ होश खो बैठा है। अरे जलपक्षी सर्पनख! तुम जल्दी नदी के पास जाओ। किसी वस्त्र को जल में भिगोकर शीघ्र ले आओ।" यों सर्पनख को आदेश दिया।

सर्पनख ने अपने उमड़नेवाले क्रोध पर नियंत्रण करते हुए मकरकेतु की ओर देखा। इसे भांपकर सिद्ध साधक शूल उठाये उसके पास गया और कड़ककर बोला-"अरे कमबख्त! जानते हो कि यहाँ पर तुम्हारा मालिक कौन है? मैं हूँ, हूँ! जल्दी पानी लेते आओ।"

मकरकेतु चुपचाप चारों ओर ताक रहा था, इसे देख सर्पनख वहाँ से हिला और थोड़ी ही दूर पर स्थित नदी की ओर चल पड़ा। इसके बाद सिद्ध साधक ने मकरकेतु के निकट जाकर कहा-"मकरकेतु! लगता है, तुम अपने साथ तीन और जल आदमियों को ले आये हो!" फिर उसके नजदीक आनेवाले लोगों की ओर देख व्यंगपूर्ण स्वर बोला-"ओह, यह तो आश्चर्य की बात है, तुम अपने साथ एक लकड़ी के पैरवाले लंगड़े को भी ले आये हो!"

"सिद्ध साधक! यह व्यक्ति हमारे जैसे माया सरोवर के प्रदेश में पैदा हुआ नहीं है। तुम लोगों जैसे मैदानों में पैदा हुआ व्यक्ति है। वह भी तुम्हारे राजा कनकाक्ष के बच्चों की खोज में आया हुआ है और एक चीते का शिकार हो कर अपना एक पैर खो बैठा है। इसका नाम मंगलवर्मा है।" मकरकेतु ने उत्तर दिया।

"ओह! हिरण्यपुर के सेनापति का पुत्र मंगलवर्मा है यह! जयशील के साथ स्पर्धा करके बाघों से लड़ने जाकर भागा हुआ कायर है?" फिर आश्चर्य में आकर अपने साथी से बोला-"जयशील! क्या तुमने अभी तक इसे पहचान नहीं लिया? यह लकड़ी के पैरवाला व्यक्ति मंगलवर्मा है!"

जयशील ने इसके पूर्व ही मंगलवर्मा को पहचान लिया था, लेकिन मगरकेतु जिसे "वैद्यदेव" पुकार रहा था, उस व्यक्ति
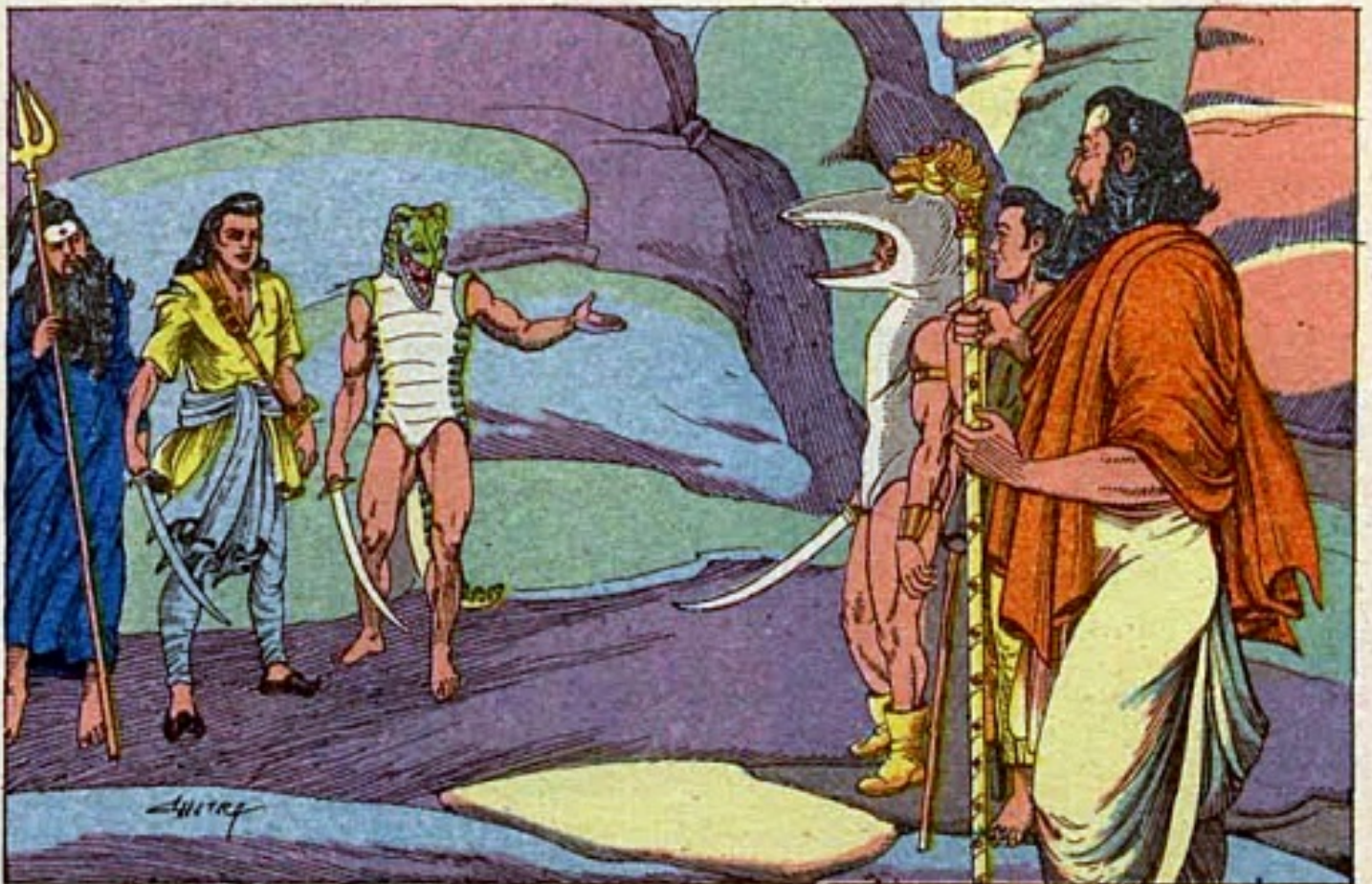
को पहचानकर वह अपाद मस्तक कांप उठा और उसे पुकारने को हुआ–"देवशर्मा!" पर उसके मुँह से बात न निकली, वह तुतलाने लगा। इसे भांपकर वैद्यदेव नामक व्यक्ति ने जयशील को इशारा किया, जिसका अर्थ था कि तुम ऐसा अभिनय न करो कि तुमने मुझे पहचान लिया है।

इस बीच सर्पनख एक वस्त्र को पानी में भिगोये ले आया और सिद्ध साधक के हाथ दिया। सिद्ध साधक ने नर वानर के सिर पर पानी निचोड़कर अपनी हथेली से उसके सर पर जोर से दे मारा, तब चिल्ला उठा–"नर वानर! तुम ज़िंदा हो! उठो! इस दुनिया में सिद्ध साधक की बात कभी झूठ नहीं हो सकती।"

नर वानर ने दूसरे ही क्षण आँखें खोल दीं। चारों तरफ़ नजर दौड़ाकर थोड़ी दूर पर नदी के किनारे सूंड उठाये खड़े जलग्रह को देख भयंकर रूप से गर्जन कर उठा और उठने को हुआ।

सिद्ध साधक ने उसका कंधा पकड़कर रोक दिया, तब बोला–"अरे नर वानर! शांत हो जाओ! मैंने तुम्हें प्राण दान दिया है। इस पल से तुम मेरे सेवक हो! मेरे वाहन हो! है न?" सिद्ध साधक ने अपने शूल को उसकी गर्दन पर टिकाकर कहा।

नर वानर क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ, आँखें तरेरते हुए दाँत पीसकर साधक पर कूदने को हुआ। साधक संभल गया, उसने उछलकर उसके माथे पर अपनी हथेली से दे मारा। चोट खाकर नर वानर नीचे गिर पड़ा, छटपटाते हुए धीरे से कराह उठा, थोड़ी देर बाद वह पीछे मुड़कर भागने को हुआ, फिर रुककर झट से सिद्ध साधक के चरणों के पास औंधे मुँह गिर पड़ा, अपने हाथ ऊपर उठाया। सिद्ध साधक खुशी में आकर ठठाकर हँसने लगा। वह पागल की भाँति हंसता ही जा रहा था। (और है)

दार्शनिक ज्ञान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजन, कुछ लोग अपनी शक्ति से बढ़कर व्यवहारों में भाग ले अपमानित होते हैं, फिर भी पतन के होने से अपनी प्रतिष्ठा बचाये रखते हैं। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें जमदग्नि नामक एक दार्शनिक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में लक्ष्मीपुर नामक गाँव में जमदग्नि नामक एक आदमी था। वह गरीबी और यातनाओं से तंग आकर ज़िंदगी से विरक्त हुआ, सन्यासी बनकर देशाटन करते हुए एक महान ज्ञानी के द्वारा दार्शनिक ज्ञान प्राप्त किया। तब जाकर जमदग्नि को

वेताल कथाएँ

उपदेश सुनने के लिए लोग अधिक संख्या में आने लगे।

ऐसा प्रतीत हुआ कि ज़िंदगी में दार्शनिक ज्ञान के द्वारा जो आनंद प्राप्त हो सकता है, वह अन्य मार्गों से नहीं। उसने इस आनंद को अपने ग्रामवासियों में बांटना चाहा और इसी विचार से वह अपने गाँव लक्ष्मीपुर को लौट आया।

अपने गाँव में आवारे के रूप में प्रसिद्ध जमदग्नि जब सन्यासी के रूप में लौट आया, तब गाँववालों ने उसका आदर-सत्कार किया। उसने अपना नाम दयानंद स्वामी रख लिया था। वह प्रति दिन संध्या को लोगों को उपदेश देने लगा। उसकी ज्ञान-संपदा तथा व्याख्यानों ने जनता को खूब आकृष्ट किया। उसके उपदेश सुनने के लिए लोग अधिक संख्या में आने लगे।

मानव का अंतिम ध्येय परमात्मा में विलीन होना है। यह मौक़ा उत्तम मानव को ही उपलब्ध होता है। प्रति दिन प्रत्येक मानव को जहाँ तक हो सके; अपना अधिक समय भगवान के ध्यान में बिताना है। इच्छाओं तथा अरिषड् वर्गों पर विजय प्राप्त करनी है। जहाँ तक आवश्यक है, उतना ही समय ऐहिक लाभ के हेतु श्रम में लगाकर शेष समय आध्यात्मिक कार्यों में लगाना है। इस प्रकार उपदेश देते हुए उदाहरण स्वरूप विविध प्रकार की कहानियाँ सुनाते हुए दयानंद स्वामी ने अपनी ख्याति चारों ओर के गाँवों में फैलाई।

इन उपदेशों से प्रभावित होकर लक्ष्मीपुर के लोगों ने मेहनत करना कम किया और घर-घर में पूजा तथा भजन करने लगे। उसी गाँव के रामनाथ नामक एक शिक्षित व्यक्ति को यह पसंद न आया। उसने दयानंद स्वामी के पास जाकर समझाया कि ईश्वर के प्रति भक्ति होनी चाहिए, पर उसकी वजह से लोगों में आलस्य पैदा नहीं होना चाहिए। पर दयानंद ने अपना मत व्यक्त किया कि संकल्प मात्र से जगत को चलानेवाले ईश्वर की आराधना करना

आलसीपन नहीं है, ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं ।

पर रामनाथ को यह सलाह पसंद न आई । उसने सोचा कि गाँव के निवासियों में मानसिक परिवर्तन लाना है । किंतु जब तक दयानंद उस गाँव में होगा, तब तक लोग उसकी बातों पर विश्वास न करेंगे । इसलिए उसने एक दूसरे गाँव के अपने मित्र के द्वारा दयानंद को उस गाँव में निमंत्रित करने का प्रबंध किया । फिर क्या था, दयानंद लक्ष्मीपुर छोड़कर दूसरे गाँव में चला गया ।

दयानंद के गाँव छोड़ते ही रामनाथ ने एक स्वांग रचवाया । इसके परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति में ईश्वर ने प्रवेश किया और उसके द्वारा कहलवाया कि उस वर्ष जो व्यक्ति ज्यादा फ़सल पैदा करेगा उसे भगवान स्वयं दर्शन देंगे । दयानंद के प्रभाव से अत्यधिक ईश्वर-ध्यान में निमग्न ग्रामवसियों ने ईश्वर का साक्षात्कार प्राप्त करने के हेतु कमर कसकर मेहनत की और फ़सलें पैदा कीं । सबसे अधिक फ़सल पैदा करनेवाला व्यक्ति शंभुदास था ।

फ़सल जिस दिन घर लाया गया उसके दूसरे दिन पड़ोसी गाँव का एक ब्राह्मण शंभुदास के घर आ धमका । उसने भिक्षा माँगी । शंभुदास ने प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मण की इच्छा की पूर्ति की । ब्राह्मण यह आशीर्वाद दे अपने रास्ते चला गया कि शंभुदास सदा संपत्ति प्राप्त करते हुए सुखी रहे ।

ब्राह्मण जब गाँव छोड़कर चला जा रहा था, तब गाँव की सीमा पर रामनाथ उससे मिला। उसे थोड़ा धन सौंपकर इस बात के प्रति कृतज्ञता प्रकट की कि ब्राह्मण ने रामनाथ के कहे अनुसार उसका कार्य संपन्न किया है। इसके बाद रामनाथ ने शंभुदास के घर लौटकर बताया कि उसने आज एक अद्‌भुत दृश्य देखा है।

शंभुदास ने पूछा—"भाई, बताओ तो सही कि तुमने कैसा अद्‌भुत देखा है?"

"मैंने अभी थोड़ी देर पहले अपने गाँव की सीमा पर एक अत्यंत तेजोवान पुरुष ब्राह्मण को देखा है। मैंने उन्हें प्रणाम किया। इस पर उन्होंने मुझे बताया—"आप का गाँव मुझे बहुत ही पसंद आ गया है। यहाँ पर सब कोई कड़ी मेहनत जो करते हैं।" इस पर मैंने उन्हें इसका कारण बताया और यह भी कहा कि सबसे अधिक फ़सल पैदा करनेवाला शंभुदास ईश्वर के दर्शन पाने के लिए अत्यंत लालायित हैं। उन्होंने हँसकर यही उत्तर दिया—"मेहनत भी पूजा के समान है। अधिक श्रम करने के कारण ही ईश्वर ने शंभुदास को ज्यादा फ़सल दी है। आज ही उसका भगवान से साक्षात्कार भी हो गया है।" इस पर मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ। मैं उनसे यह पूछना ही चाहता था कि शंभुदास को ईश्वर का साक्षात्कार होने का समाचार उन्हें कैसा मालूम हुआ? तभी वे अदृश्य हो गये। मैंने चारों तरफ़ देखा, पर कहीं उनका पता न चला। इस अद्‌भुत पर चकित हो तुमसे यह बात जानने के लिए सीधे यहाँ आ गया हूँ।" रामनाथ ने समझाया।

शंभुदास को लगा कि उसके घर भिक्षा प्राप्त करने के लिए आया हुआ व्यक्ति ही भगवान है। यह खबर आग की तरह सारे गाँव में फैल गई। भगवान के इस कथन का प्रभाव सारे ग्रामवासियों पर पड़ा कि श्रम करना भी पूजा के समान है। अलावा इसके उस वर्ष सारे गाँव में

अच्छी फ़सल हुई थी, इस कारण सब खुशहाल थे। इसी कारण सबने यह निर्णय किया कि इसी प्रकार सदा श्रम करके अपनी संपत्ति की वृद्धि करनी है।

थोड़े महीने बीतने पर दयानंद स्वामी अपने गाँव को लौट आया। उसे इस बात का बड़ा दुख हुआ कि पहले की भांति गाँव में ईश्वर के प्रति अधिक पूजा-भजन नहीं हो रहे हैं। सारी जनता अपने अपने काम में निमग्न है। इससे क्षुब्द होकर दयानंद स्वामी ने फिर से अपने उपदेशों को प्रारंभ करना चाहा। लेकिन प्रथम उपदेश के समय ही रामनाथ ने दयानंद स्वामी से मिल कर अपने प्रश्नों के द्वारा उन्हें घबरा दिया। रामनाथ ने पूछा—"महानुभाव! इतने विशाल विश्व के रहते आप ने इसी गाँव को अपने उपदेश देने का क्यों निर्णय किया?"

"चूंकि यह मेरा जन्मस्थान है।" दयानंद ने उत्तर दिया।

"इसका मतलब है कि आप अपने ग्राम के प्रति मोह रखते हैं। जब आप इस मोह से मुक्त न हो पाये तो हम जैसे साधारण व्यक्तियों के लिए कैसे संभव है?" रामनाथ ने पूछा।

"वैसे मेरे मन में कोई मोह नहीं है, किंतु जो लोग असंख्य कामनाओं को लेकर यातनाएँ भोग रहे हैं, उनका उद्धार करने के लिए मुझे कहीं न कहीं से अपना कार्यक्रम प्रारंभ करना चाहिए न?" दयानंद ने अपने कथन का समर्थन किया।

"आप तो कामनाओं पर विजय प्राप्त करना जाहते हैं, ऐसी हालत में आप की यह कामना कहाँ तक उचित है?" रामनाथ का सवाल था ।

"स्वार्थ रहित कामना गलत नहीं है न?" दयानंद ने सकुचाते हुए जवाब दिया ।

"अगर यह बात सच है तो इस गाँव के लोग जो श्रम करते हैं, वे अपने स्वार्थ के लिए यह श्रम नहीं कर रहे हैं । वे अपनी पत्नी, पुत्र तथा माता-पिता के वास्ते श्रम उठा रहे हैं...वैसे प्रत्येक मनुष्य के भीतर ईश्वर का निवास है । इसलिए यदि एक मानव दूसरे मानव की सेवा करता है तो इसका तात्पर्य यही है कि वह ईश्वर की सेवा करता है । शरीर को कष्ट देने के लिए केवल उपवासों की ही आवश्यकता नहीं है । शारीरिक श्रम द्वारा शरीर कष्ट उठाता है, साथ ही कुछ लोगों को आहार मिल जाता है । क्या यह ईश्वर की पूजा नहीं है?" रामनाथ ने पूछा ।

ये प्रश्न सुनने पर दयानंद स्वामी की सहनशीलता जाती रही । उन्होंने क्रोध में आकर कहा–"भाई, तुम अपने वितंडवाद के द्वारा ईश्वर की निंदा कर रहे हो? तुम जैसे मूर्खों की वज़ह से जनता बिगड़ जाएगी ।"

"आप ने अरिषड् वर्गों पर विजय प्राप्त की, फिर भी आप की बात न मानने पर आप को क्रोध होता है, तो हम लोग जो अपने श्रम पर जीवन बिताते हुए आप जैसे ज्ञानियों को अन्न प्रदान करते हैं, ऐसी हालत में आप यह कहे कि हम अपना रास्ता बदल ले तो हमें कितना क्रोध होना चाहिए?" रामनाथ ने उत्तेजित हो पूछा ।

दयानंद स्वामी इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे पाया, हाथ जोड़कर रामनाथ को प्रणाम करके बोला–"भाई, आज तक मैं इसी भ्रम में था कि मैंने दर्शन के सार को हृदयंगम कर लिया है, तद्द्वारा जनता का उद्धार कर सकता हूँ, पर आज मुझे मालूम हुआ कि मेरा यह ज्ञान थोथा है । मुझे क्षमा करो । मैं अपने सन्यास को

त्यागकर एक साधारण मानव के रूप में अपना शेष जीवन बिताऊँगा।"

रामनाथ ने उसे समझाया कि वह आज से गाँव के बच्चों को पढ़ाने का कार्य करें और उसे सुखपूर्वक जीने के लिए सारी सुविधाएँ कर दी जाएँगी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, सारे समाज को अपने अधूरे ज्ञान के द्वारा दगा देनेवाले दयानंद को अपने मार्ग पर बढ़ने न देकर रामनाथ ने अपने गाँव में उसके जीविकोपार्जन का क्यों प्रबंध किया? तर्क के द्वारा उसे पराजित किया था, क्या इस कारण से किया? या उसके दार्शनिक ज्ञान के प्रति थोड़ा-बहुत विश्वास रखने की वजह से? इन प्रश्नों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया—"रामनाथ के द्वारा जमदग्नि को अपने गाँव में जीविकोपार्जन का प्रबंध करने के कई कारण हैं। एक तो यह है कि जमदग्नि अपने ग्राम के प्रति अपार प्रेम रखता है। उस गाँव के द्वारा उसका सुधरना भी उचित ही है। साथ ही जमदग्नि को उचित दण्ड भी मिल गया है। दार्शनिक ज्ञान का प्रचार करने के बदले बच्चों को पढ़ाने के लिए उसे नियत करना उसका पतन ही माना जाएगा। इसके अतिरिक्त यदि वह उस गाँव को छोड़कर दूसरे गाँव में जाता है तो वहाँ के लोग दार्शनिक ज्ञान का शिकार हो सकते हैं। अपने गाँव में तो वह आइंदा दार्शनिक ज्ञान का उपदेश न देगा। इसी ख्याल से रामनाथ ने ऐसी व्यवस्था की। अब जमदग्नि की बात ले तो जिस गाँव में वह अपना भरण-पोषण न करने की हालत में सन्यासी बन बैठा है, उसी गाँव में एक शिक्षक के रूप में लोगों का आदर प्राप्त करना उसका उद्धार ही कहा जाएगा।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
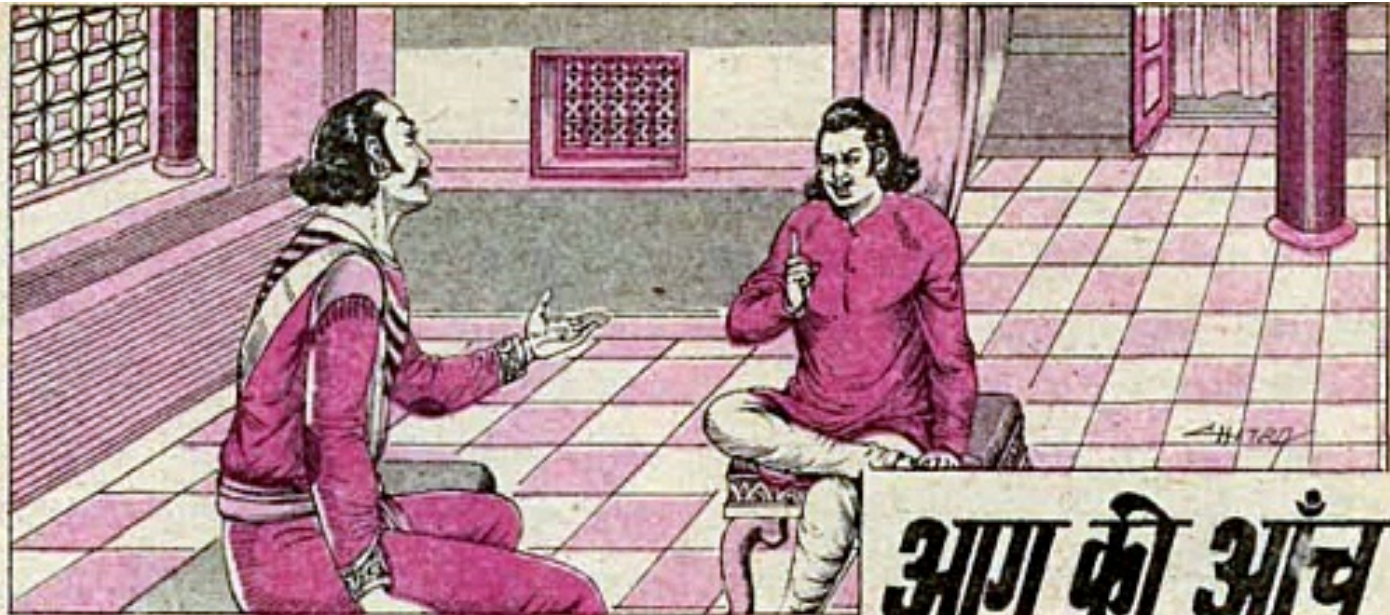
आग की आँच

गोपाल राजा महेन्द्रवर्मा का दरबारी विदूषक था। वह बड़ा ही अक़्लमंद और मजाकिया था। इस कारण महेन्द्रवर्मा का दरबार सदा कोलाहल से भरा रहता था। राजा गोपाल को बहुत चाहता था और कभी-कभी उसकी सलाह भी लिया करता था।

लेकिन गोपाल में एक ऐब थी। वह यह कि वह एक फ़िज़ूल खर्ची था। उसे वैसे अच्छी तनख्वाह मिलती थी। जब तब पुरस्कार भी मिल जाया करते थे। फिर भी उसके हाथ एक कौड़ी भी बचती न थी। सदा वह धन के लिए तरसा करता था।

दशहरे का त्योहार निकट था। उसे अपने दामाद को घर लिवा लाना था। सत्कार करना था। वस्त्र आदि भेंटें देनी थीं, साथ ही कम से कम एक सप्ताह तक दावतें देनी थीं। लेकिन ये सब कैसे? यही सवाल था! उसकी तनख्वाह कभी की खर्च हो गई थी। हाथ में कौड़ी न थी! कहीं से कर्ज लाना चाहे तो उसके जान-पहचान के कोई न थे। दामाद का आदर-सत्कार न करे तो उसकी इज्जत धूल में मिल जाएगी। इस हालत में उसे जादूगर सोमनाथ की याद हो आई। उसका जादू ही उसकी रक्षा कर सकता था!

जादूगर सोमनाथ गोपाल को धन दे न पाया, पर राजा के यहाँ से धन वसूलने का बढ़िया उपाय बताया।

गोपाल को प्रति दिन दरबार में हाजिर होना पड़ता था। उसकी चाटूक्तियों से जब तक दरबारी हँसकर लोट-पोट न हो जाते, तब तक दरबार की समाप्ति न होती थी। ऐसी हालत में एक दिन गोपाल दरबार में हाजिर न हुआ। इसका कारण जानने के लिए राजा ने अपने

श्री. ए. सी. सरकार, जादूगर

सेवकों को गोपाल के घर भेजा। सेवकों ने लौट कर राजा को एक विचित्र बात बताई। गोपाल अपने घर के शहतीर से एक बर्तन लटका कर ज़मीन पर आग सुलगाते सेवकों से बोला कि रसोई के बनते ही भोजन करके दरबार में हाज़िर हो जाऊँगा।

राजा ने कहा–"कहीं गोपाल तो पागल नहीं हो गया है? शहतीर से बंधा बर्तन ज़मीन पर सुलगाई गई आग से कहीं गरम होगा? इसका तो पता लगाना चाहिए।" यों कहकर कुछ दरबारियों को साथ ले राजा गोपाल के घर पहुँचे। गोपाल सचमुच शहतीर से बर्तन बांधकर उसके नीचे फ़र्श पर आग जला रहा था।

गोपाल ने राजा को देख विस्मय में आकर पूछा–"महाराज, आप स्वयं आ गये? इस बर्तन में रसोई के बनते ही खाना खाकर मैं खुद आप की सेवा में हाज़िर हो जाता!"

"गोपाल! तुम मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हो? इस आग की आँच से चावल तुम्हारी इस ज़िंदगी में कहीं पक सकता है?"

"महाराज! आप यह क्या कह रहे हैं? आग की आँच इससे दूर रहे, तब भी मैं खाना पका सकता हूँ।" गोपाल ने दृढ़ निश्चयता के साथ कहा।

"तुम अगर यह बात सब के सामने साबित कर दिखाओगे तो तुम्हें सौ अशर्फ़ियाँ इनाम दूँगा।" राजा ने कहा।
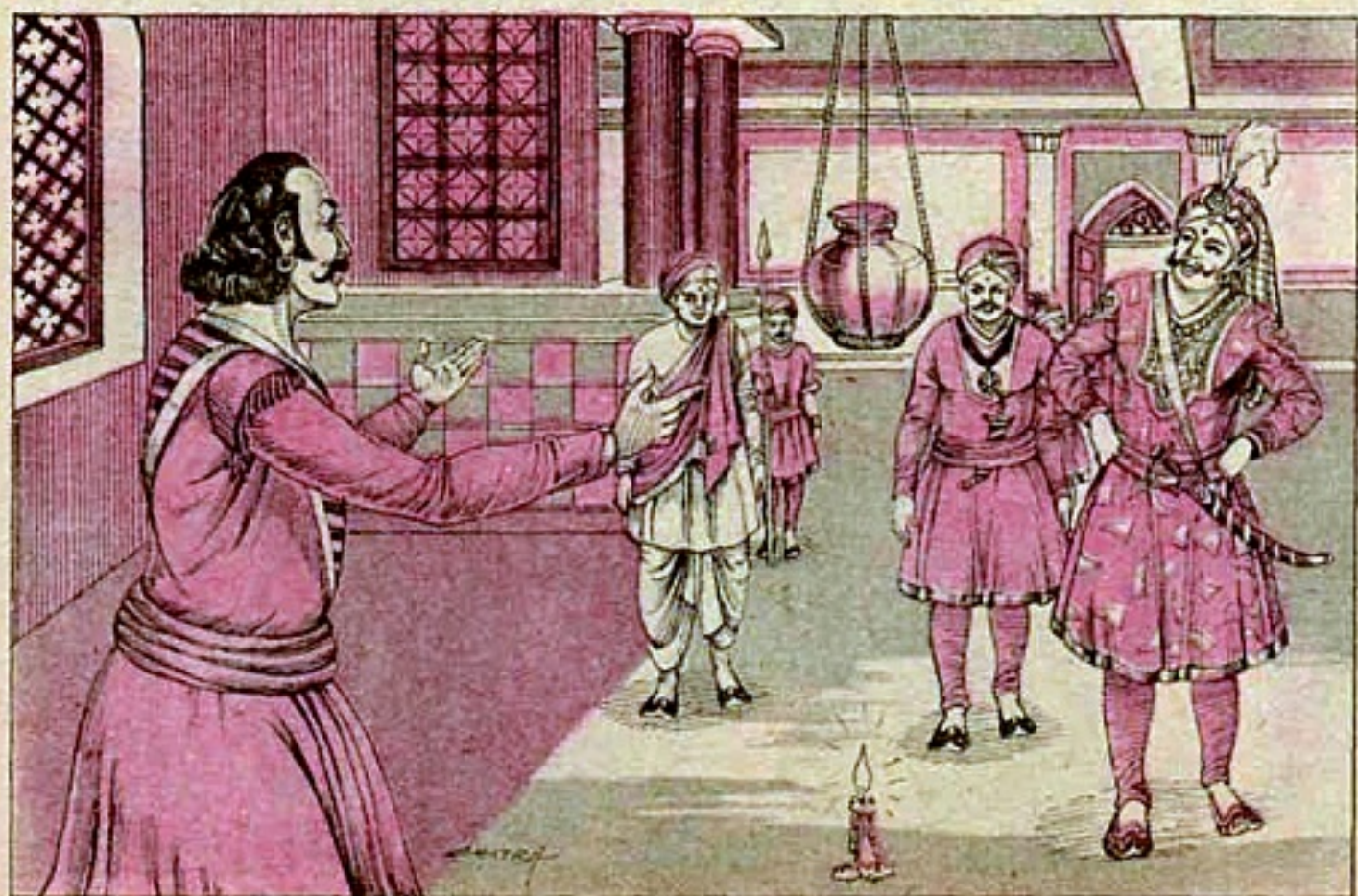
"महाराज! मैं कल भरी सभा में यह बात साबित कर दिखाऊँगा! मैं आज भोजन किये बिना चलता हूँ। चलिए!" गोपाल ने कहा।

दूसरे दिन गोपाल राज दरबार में एक बर्तन, ढक्कन और थोड़ा चावल लेते आया। उसने बर्तन मंत्री के हाथ देकर खूब साफ़ करवाया। इसके बाद उसमें चावल डालकर पानी भरकर ढक्कन बंद किया। उस बर्तन को एक छीके में रखकर एक दरबारी को पकड़े रहने का आदेश दिया, तब उससे पाँच-छे गज की दूरी पर एक मोमबत्ती जलाकर रखा।

"इस मोमबत्ती की आँच से बर्तन के भीतर का चावल पकने जा रहा है।" गोपाल ने कहा। इसके बाद उसने छींका पकड़े हुए व्यक्ति से पूछा—"सुनो, कहीं चावल पकने की आवाज हो रही है या नहीं?"

दरबारी ने बर्तन के निकट कान ले जाकर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"महाराज, सचमुच पानी खौल रहा है!"

राजा ने बर्तन को छूकर देखा। वह बहुत ही गरम था।

"गोपाल! लो! ये तुम्हारी सौ सोने की अशर्फ़ियाँ हैं!" यों राजा ने गोपाल के हाथ प्रतियोगिता की अशर्फ़ियाँ सौंप दीं।

त्योहार के दिन गोपाल का दामाद आ पहुँचा। उसका अच्छे ढंग से आदर-सत्कार हुआ। दावत में सोमनाथ भी शामिल हुआ। गोपाल ने सोमनाथ को दस अशर्फ़ियाँ भेंट कीं।

सोमनाथ ने गोपाल की कैसी सहायता की थी? सफ़ेद चूने के पत्थर को फोड़कर चावल के दानों के बराबर के टुकड़ों को गोपाल ने चावल में खूब मिला दिया। झट देखने वालों को वे चावल के दाने जैसे प्रतीत होंगे। उन्हें बर्तन में डालकर पानी भर दिया, ढक्कन बंद करके आग जलाई; फिर क्या था, चूने के टुकड़े आवाज के साथ पक गये। इसे देख दरबारियों ने सोचा कि सचमुच चावल ही पक रहा है।

सच्चा पिशाच

एक बार श्मशान में पिशाचों के मन में इस बात का संदेह पैदा हुआ कि पिशाच ज्यादा दुष्ट हैं या मनुष्य ?

"हमारी शक्ति मनुष्यों से कहीं अधिक है, इसलिए हम्हीं ज्यादा दुष्ट और बुरे हैं।" युवा पिशाचों ने कहा।

"अनुभव के द्वारा ही यह समस्या हल हो सकती है। इसलिए तुम में से कुछ लोग मनुष्यों के बीच जाकर सचाई का पता लगाकर लौट आओ।" एक वृद्ध पिशाच ने कहा और इसके वास्ते तीन अनुभवी पिशाचों को नियुक्त किया।

पिशाचों ने लौटकर बताया कि मनुष्य ही ज्यादा दुष्ट हैं। उनमें से एक ने कहा– "मनुष्यों के भीतर चोरी, जुआ और शराब पीने की आदत ज्यादा है। हम इन्हें बिलकुल जानते तक नहीं।"

दूसरे पिशाच ने कहा–"मनुष्य धोखा देते हैं, दूसरों की बुराई करते हैं।"

"हमारे बीच जो मित्रता और भ्रातृभाव है, वे मानवों में नहीं हैं। वे अपने समाज के लोगों को कष्ट देते हैं।" तीसरे पिशाच ने कहा। इस पर वृद्ध पिशाच ने निर्णय दिया–"मनुष्य ही सच्चा पिशाच है।"
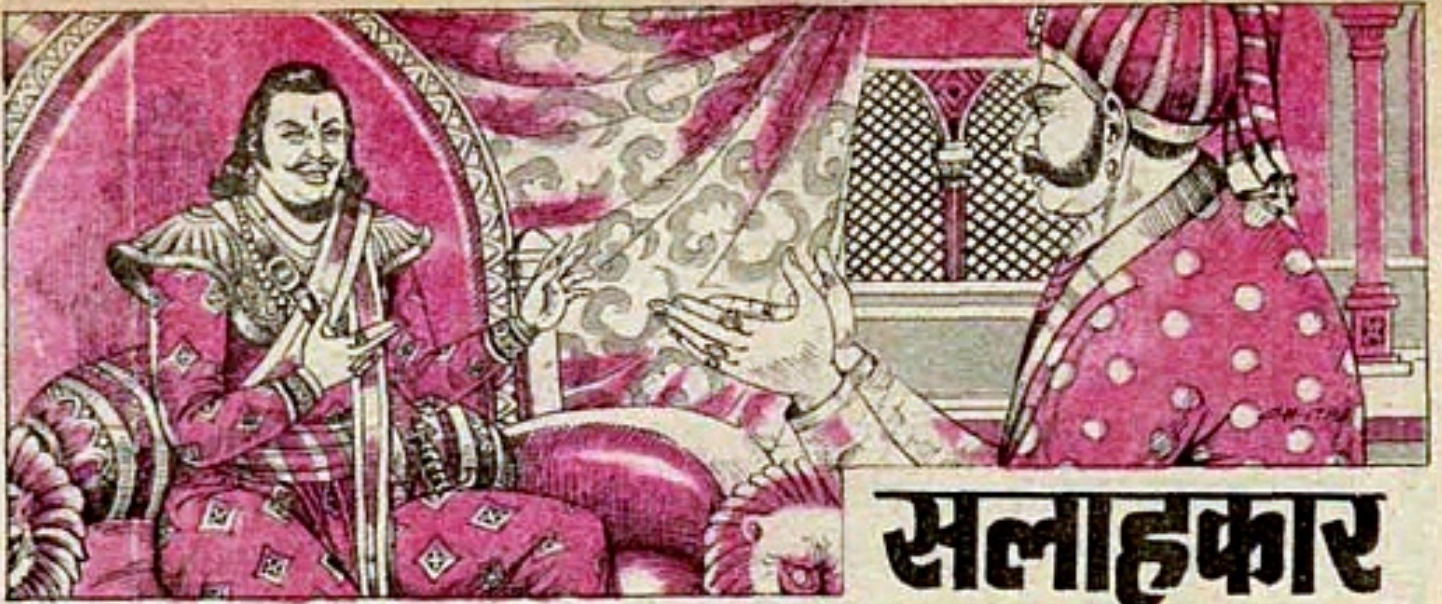
सलाहकार

प्राचीन काल में एक राजा के यहाँ एक सलाहकार था। वह साठ साल का हो चुका था। उस राज्य के नियमानुसार राजकर्मचारियों को साठ साल की अवस्था में पहुँचने पर नौकरी से वंचित होना पड़ता था।

पुराने सलाहकार ने अपनी नौकरी से त्याग पत्र देते हुए राजा से कहा–"महाराज, मैं गत पच्चीस सालों से आप का नमक खाते आया हूँ। इधर दस वर्षों से मैं अपने पुत्र को अच्छा प्रशिक्षण दे रहा हूँ। मेरे ख्याल से मेरा पुत्र एक अच्छा सलाहकार बन सकता है। इसलिए आप कृपया इसे अपने नये सलाहकार के रूप में नियुक्त कीजिए।"

राजा ने हँसकर उत्तर दिया–"यह कौन बड़ी बात है? आप सिफ़ारिश करते हैं तो क्या मैं मना कर सकता हूँ? मैं थोड़े दिन आप के लड़के का कार्य देखूंगा। अगर वह उपयोगी सिद्ध होगा ओ ज़रूर मैं उसे अपने सलाहकार के रूप में नियुक्त करूँगा।"

इसके बाद बूढ़े सलाहकार की जगह उसका पुत्र नियुक्त हुआ।

थोड़े दिन बीत गये। एक दिन राजा ने नये सलाहकार को बुलाकर पूछा–"मुझे अपने गुप्तचरों द्वारा विश्वस्त रूप से मालूम हुआ है कि पड़ोसी राजा हमारे राज्य पर हमला करने की तैयारियाँ कर रहा है। अब हमें क्या करना होगा?"

नये सलाहकार ने सोचकर कहा–"बताइये, आप क्या करना चाहते हैं?"

"अगर हम्हीं शत्रु पर पहले हमला कर बैठे तो कैसे होगा?" राजा ने पूछा।

"वाह! बहुत बढ़िया होगा!" नये सलाहकार ने उत्तर दिया।

रामगोपाल शर्मा

"लेकिन ऐसा करने पर हमारे शत्रु की दुर्बुद्धि का पता दुनिया को कैसे चलेगा? गलती हमारी ही मानी जाएगी न? हमारी जनता यह कह सकती है कि हमने ही पहले चढ़ाई की है और हमारे निर्णय का विरोध भी कर सकती है।" राजा ने कहा।

"यह बात भी सही है। यदि हम जनता की सहानुभूति प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपना रहस्य प्रकट न करना होगा।" नये सलाहकार ने सुझाया।

"यदि ऐसा न करके हम शत्रु के युद्ध की तैयारियों को गुप्त रखकर रसद आदि संग्रह करके सेना का संगठन करे और अचानक हमला करने की बात सोचनेवाले शत्रु पर उल्टा वार करे तो कैसे होगा?" राजा ने पूछा।

"अद्भुत होगा! आप की बुद्धि कुशलता प्रशंसनीय है।" नये सलाहकार ने कहा।

राजा ने अपने नये सलाहकार को भेजकर पुराने सलाहकार को बुलवाया और कहा—"सुनिये भट्टजी! राज्य के मामलों में सलाह देना वंश का पेशा नहीं है। वह परंपरागत रूप से प्राप्त न होनेवाली एक कला है। आप ने अपने पुत्र को प्रशिक्षण देते समय विभिन्न प्रकार की समस्याओं के हल सुझाये होंगे। किंतु आप के पुत्र के भीतर समस्या को समझकर उसका हल सुझाने की शक्ति अभी तक नहीं आई है। उसे हम्हीं को समस्या बताकर हमें ही उसका हल बताना पड़ रहा है। उस समस्या के हल की उलझनों को भी हमें ही सुझाना पड़ता है। अन्यथा वह स्वयं सुझाने की शक्ति नहीं रखता। अलावा इसके एक ही समस्या के परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न-भिन्न हल होते हैं। उन्हें समझने की क्षमता सलाहकार में होनी चाहिए। आप का पुत्र सलाहकार के रूप में बिलकुल काम न देगा। फिर भी आप चिंता न कीजिए, उसके योग्य कोई अन्य नौकरी में अवश्य उसे दिला दूंगा।"

विचित्र घटना

प्राचीन काल में कलिंग देश पर राजा आनंद वर्द्धन शासन करता था। उन्हें जब अनेक वर्षों तक कोई संतान न हुई, तब उन्होंने दूसरा विवाह किया, इसके बाद थोड़े ही दिनों में छोटी रानी गर्भवती हुई। राजा और प्रजा के आनंद की सीमा न रही। उन्हीं दिनों में बड़ी रानी के भी गर्भवती होने का समाचार मिला। सब का संतोष दुगुना हो गया।

राजा दोनों रानियों के साथ समान रूप से प्रेम करता था। इस बीच राजमहल में एक अनोखा समाचार सुनने में आया कि एक हाथी ने घोड़े का जन्म दिया है। सब लोग विस्मय में आ गये, पर यह सोचकर मौन रहे कि शायद इस कलियुग में ऐसी घटना भी संभव हो!

इसके बाद दोनों रानियों का एक ही समय में प्रसव हुआ। बड़ी रानी ने एक सुंदर बालक का जन्म दिया, पर छोटी रानी के गर्भ से एक बिल्ली पैदा हुई। लोगों ने सोचा कि मानव के गर्भ से बिल्ली का पैदा होना भी शायद कलियुग की महिमा का प्रभाव हो। परंतु बड़ी रानी के पुत्र हुआ था, इस कारण राजा अत्यंत प्रसन्न था।

इस घटना के थोड़े दिन बाद राज दरबार में एक ज्योतिषी आया। उसने कहा कि वह भूत और भविष्य की घटनाएँ बता सकता है। राजा ने अपने पुत्र की जन्मकुंडली बनाने के ख्याल से ज्योतिषी को बड़ी रानी के महल में भेजा।

ज्योतिषी बड़ी रानी के महल में गया। राजकुमार की जन्म कुंडली बनाई और बोला—"महारानी, राजकुमार अपनी माता के पास नहीं, दूसरी नारी के यहाँ पलेगा! मगर इसकी जन्मकुंडली दोषपूर्ण है। इस

जगदीश गोयल

कारण इसे पालनेवाली सौतेली माँ अधिक दिन तक जीवित नहीं रहेगी।"

ये शब्द सुनकर बड़ी रानी घबराकर बोली–"क्या इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं है?"

"महारानीजी, दुष्ट ग्रहों की शांति का प्रयत्न करना बेकार है। जन्मकुंडली कभी गलत नहीं हो सकती; मैं धोखा देकर धन लूटनेवाला ज्योतिषी नहीं हूँ।" ज्योतिषी ने स्पष्ट कहा।

"तो फिर इसका क्या उपाय है?" रानी ने पूछा।

"इस राजकुमार को पालनेवाली नारी इस बच्चे से पिंड छुड़ायेंगी तो उनके प्राणों के लिए कोई खतरा न होगा। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है!" ज्योतिषी ने कहा।

बड़ी रानी ने ज्योतिषी को थोड़ा धन देकर भेज दिया, तब राजकुमार को लेकर छोटी रानी के महल में पहुँची। छोटी रानी को चिंतामग्न देख बोली–"देखो बहन! तुम्हारी इस हालत पर मैं बड़ी दुखी हूँ। यह बालक हम दोनों का पुत्र है। तुम्हीं इसे पाल लो।" राजकुमार को छोटी रानी के हाथ सौंपते बोली।

छोटी रानी ने आवेश में आकर कहा–"बहन, मैं सारी बातें जानती हूँ। उस दुष्ट जन्मकुंडलीवाले राजकुमार को पालकर मैं अपने प्राणों के साथ खिलवाड़ करना नहीं चाहती।"
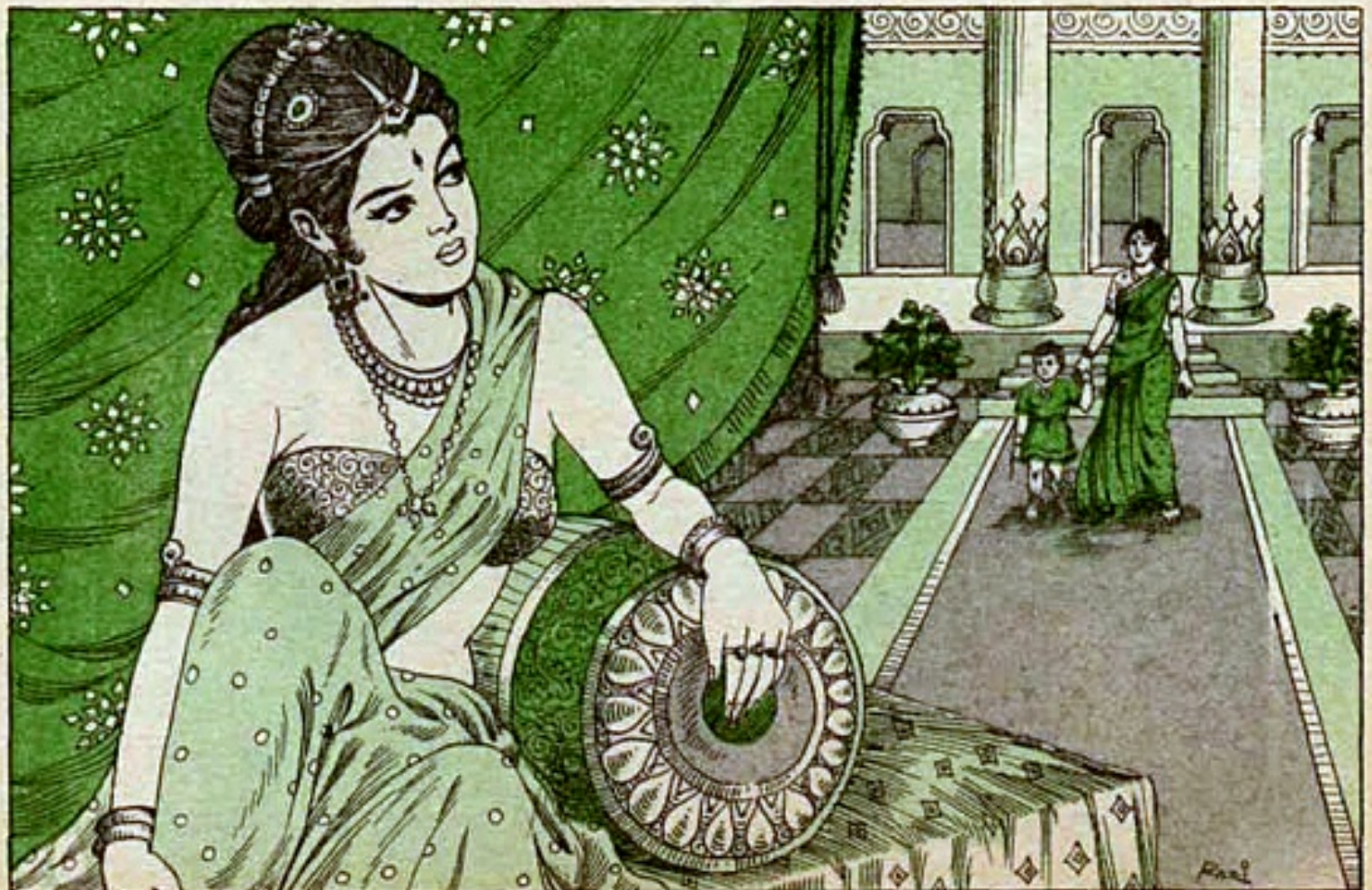
रानी उलझन में फंस गई। अब असली बात को प्रकट करना अनिवार्य-सा हो गया। इसलिए वह बोली–"बहन, मुझे क्षमा करो! यह बालक सचमुच तुम्हारा पुत्र है! मेरे कोई संतान न थी, इस कारण राजा ने तुम्हारे साथ विवाह किया। तुम गर्भवती हो गई। इस पर मेरे मन में तुम्हारे प्रति ईर्ष्या पैदा हुई। तुम राजमाता बन जाओगी तो मेरी हालत क्या होती? इसलिए मैंने एक योजना बनाई। मेरे भी गर्भवती हो जाने की अफ़वाह उड़ाई। मेरी योजना और षड़यंत्र पर किसी को संदेह न हो, इसलिए मैंने दरबार में यह अफ़वाह फैलवा दी कि एक हाथी ने घोड़े के बच्चा का जन्म दिया है और तुम्हारी बगल में बिल्ली के बच्चे को सुलवा दिया। इस तरह मैंने तुम्हें दगा दिया। इसके लिए में बहुत ही दुखी हूँ। तुम अपने बच्चे को ले लो।"

छोटी रानी ने अपने पुत्र को गोद में लेते हुए कहा–"दीदी! चिंता न कीजिए! पहले आप पर मेरे मन में जरा भी संदेह न था, मगर मेरे गर्भ से बिल्ली के बच्चे का पैदा होने का समाचार सुनने पर आप पर मेरे मन में शंका पैदा हुई। फिर पिछली बातों पर विचार किया तो मेरे ही साथ आप का भी गर्भवती होने तथा हाथी के द्वारा घोड़े के जन्म देने का झूठा प्रचार सुनने पर मेरी शंका और बढ़ गई। वास्तविक समाचार को प्रकट करने के हेतु मैंने एक ज्योतिषी को नियुक्त किया। वास्तव में वह ज्योतिषी नहीं, उसने मेरे पुरस्कार के लोभ में पड़कर मेरे कहे अनुसार किया है। उसके द्वारा मैंने जो नाटक रचा, वह सफल रहा। आप के कथनानुसार यह बालक हम दोनों का पुत्र है। इसलिए आप को पश्चात्ताप करने की आवश्यकता नहीं है। आप ने एक नाटक रचा तो मैंने उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरा नाटक रचा। इसलिए में आप से नाराज़ नहीं हूँ! मुझे क्षमा कीजिए!"

PARLE POPPINS
colouring contest
PARLE
POPPINS
MIXED FRUITY SWEETS
Entry
Form
Hurry!
Send in
your entry along
with 5 Parle
Poppins wrappers
before 5th Dec. 1977

PARLE
POPPINS
MIXED FRUITY SWEETS
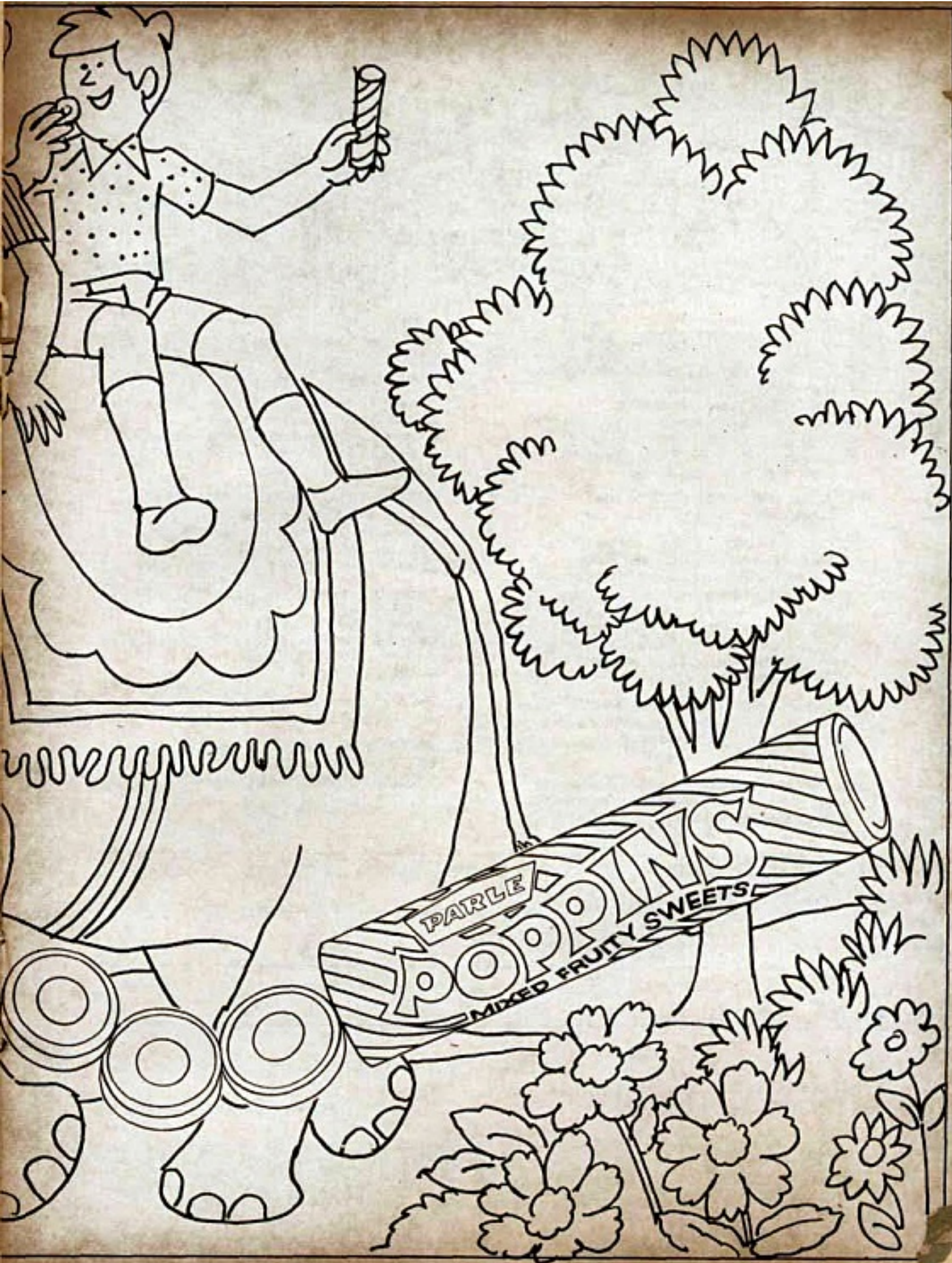
win super, super prizes

4 first prizes of Rs. 400 each
8 second prizes of Rs. 200 each
16 third prizes of Rs. 100 each
400 consolation prizes of Rs. 25 each

RULES AND CONDITIONS

1. Only children up to 12 years of age residing within the Union of India are eligible to enter this contest. Children of the employees of Parle Products Private Limited, their wholesalers and of Everest Advertising Private Limited, are not eligible for this contest.
2. Crayons, water colours, ink or any other colouring medium may be used.
3. Entries must be submitted only on official entry forms available from any Parle dealer or the October issue of Chandamama publication. Each entry form must carry the full name and address in ink and block letters, in ENGLISH only. Entries must also be signed by the child's parent or guardian certifying the age, and that the entry is the unaided work of the child.
4. 4 first prizes, 8 second prizes, 16 third prizes and 400 consolation prizes will be equally divided among four regions: Bombay Calcutta • Madras • Delhi.
5. A panel of judges will meet in Bombay to choose the winners in all four regions. Prizes will be sent to the winners by Money Order.
6. The names and addresses of the first and second prize winners will be announced in leading newspapers.
7. There is no entry fee. But each entry must be accompanied by 5 Parle Poppins wrappers. You may submit any number of entries but each must be accompanied by 5 Parle Poppins wrappers.
8. Entries submitted for the contest will not be returned. Prize-winning entries will become the property of Parle Products Pvt. Ltd., and may be used for any advertising or publicity purposes.
9. No entrant is eligible for more than one prize.
10. Entries should be addressed to Parle Poppins Colouring Contest, P. O. Box No. 1028, G.P.O., Bombay 400 001.
11. The decision of the judges will be absolute and final.
12. NO CORRESPONDENCE WILL BE ENTERTAINED UNDER ANY CIRCUMSTANCES WHATSOEVER.

Contest closes: 5th Dec. 1977

Name of child: Miss/Master

Age: State:

Address:

This is the unaided work of my child/ward. We have read and understood the Rules and Conditions and shall abide by them unconditionally.

Signature of Parent/Guardian

Mail this entry today along with 5 Parle Poppins wrappers to:

PARLE POPPINS COLOURING CONTEST,

P.O. Box No. 1028, G.P.O., Bombay 400 001.

HCN

किंजल्प पक्षी

प्राचीन काल में काशी नरेश के यहाँ उग्रसेन नामक एक मंत्री था। उसका पुत्र जयसेन अव्वल दर्जे का आवारा था। एक दिन वह अपने नटखट मित्रों के साथ काशी की गलियों में घूम रहा था। उसकी दृष्टि राजपुरोहित पुष्य की पत्नी पद्मा पर पड़ी। पद्मा के सौंदर्य पर वह मोहित हो गया।

काशी में तटिल्लता नामक एक दलालिन थी। वह दो प्रेमियों को मिलाने की कला में बड़ी निपुण थी। जयसेन ने तटिल्लता के घर जाकर अनुरोध किया कि पद्मा को उसके अनुकूल बना दे। तटिल्लता ने सोचा कि मंत्री के पुत्र की सहायता करना भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा, लेकिन मंत्री को सूचित किये बिना ऐसे मामलों में दखल देना खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इसलिए तटिल्लता ने उग्रसेन के यहाँ जाकर उसके पुत्र की कामना का परिचय दिया।

उग्रसेन यह समाचार सुनकर नाराज नहीं हुआ, बल्कि खुश हुआ और उसने तटिल्लता को यह कार्य संपन्न करने में प्रोत्साहन भी दिया। इसकी पूर्ति करने के लिए उग्रसेन ने उसी वक़्त तटिल्लता को थोड़ा धन भी दिया। इसके पीछे मंत्री का उद्देश्य यह था कि वास्तव में राजा मंत्री की अपेक्षा पुरोहित पुष्य पर ज्यादा विश्वास रखते हैं, अलावा इसके पुष्य और उसकी पत्नी आदर्श दंपति के रूप में लोकप्रिय हुए हैं, पुष्य की ख्याति उसकी पत्नी की वजह से और बढ़ गई है। ऐसी हालत में यह अफ़वाह फैला दे कि पुष्य की पत्नी का चरित्र ठीक नहीं है, तब वह समाज के भीतर कलंकित हो जाएगा। मंत्री ने तटिल्लता को प्रोत्साहन दिया।

गंगाधर त्रिपाठी

"कोई बात नहीं; पर तुम इसके लिए आवश्यक सारी तैयारियाँ खुद कर लो ।" पद्मा ने समझाया ।

इसके बाद तटिल्लता ने मंत्री उग्रसेन के यहाँ पहुँचकर बताया—"मंत्री महोदय, आप ऐसा उपाया कीजिए जिससे राज पुरोहित थोड़े दिनों के लिए राजधानी से बाहर रहें ।"

उग्रसेन तटिल्लता को आश्वासन देकर राजा की सेवा में पहुँचा और बोला—"महाराज! मैंने किंजल्प नामक विचित्र पक्षियों का नाम सुना है। उसका रंग अनोखा होता है और मनुष्यों की भाषा बोलते हैं। जिनके पास एक किंजल्प पक्षी होगा, वे चक्रवर्ती सम्राट बन जाते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि हमें शीघ्र ही एक पक्षी को प्राप्त कर लेना उत्तम होगा ।"

"ऐसे पक्षी कहाँ पाये जाते हैं?" राजा ने पूछा ।

"हिमालयों की एक गुफा में है । उन्हें मंत्र-शक्ति के बल पर लाना होगा । हमारे राज पुरोहित उन्हें लाने में समर्थ हैं ।"

इसके बाद किंजल्प पक्षी को लाने के लिए राज पुरोहित को हिमालयों में भेजने का निश्चय हुआ । राजा का आदेश पाकर पुरोहित घर लौटा । उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ देख पद्मा ने कारण

तटिल्लता पद्मा के घर पहुँची । अपनी सारी चालाकी का प्रदर्शन करके पद्मा को पराये पुरुष के साथ जाने में उकसाया । पर पद्मा ने भी तटिल्लता के जाल में फँसने से कोई आपत्ति नहीं उठाई । उसने यह जिज्ञासा व्यक्त की कि उस पर मोहित होनेवाला वह व्यक्ति कौन है? तटिल्लता खुश होकर बोली—"तुम पर जान देनेवाला व्यक्ति मंत्री का पुत्र जयसेन है । तुम्हें किसी भी हालत में उसकी इच्छा की पूर्ति करनी होगी ।"

"क्या यह बात गुप्त रहेगी?" पद्मा ने उत्सुकता में आकर पूछा । "नहीं!" तटिल्लता ने कहा ।

पूछा। पुष्य ने कहा–"इन पक्षियों के मामले में कोई दगा है। मगर राजा के आदेश का मुझे पालन करना ही होगा।"

"इसमें राजा का कोई हाथ न होगा। आप कल सुबह हिमालयों में जाने का अभिनय करके आधी रात तक गुप्त रूप से घर को लौट आइए। उन पक्षियों का मामला मैं तय कर लूंगी।" पद्मा ने समझाया।

पुरोहित ने पद्मा के कहे अनुसार करने को मान लिया। वह दूसरे दिन प्रातःकाल घर से निकल पड़ा और आधी रात के वक़्त वेश बदलकर घर लौट आया और भीतर छुप गया।

दूसरे दिन संध्या के समय तटिल्लता जयसेन को साथ ले राज पुरोहित के घर पहुँची। पद्मा पहले से ही सजधजकर तैयार हो चुकी थी। उसने मंदहास करते हुए दोनों का स्वागत किया। रेशमी वस्त्र बिछाये गये आसन पर उन्हें बिठाया, उस आसन पर बैठते ही वे दोनों आसन के नीचे स्थित गड्ढे में गिर गये और रोने-कलपने लगे। आसन के गद्दों के नीचे कोई आधार न था। पद्मा ने गड्ढे को ढक दिया, तीन दिन तक गड्ढे के भीतर ही उन्हें रहने दिया। रोज दुपहर के वक़्त उन्हें थोड़ा खाना फेंक देती थी।

चौथे दिन पद्मा ने राजा के पास यह खबर भेज दी कि उसका पति अपनी मंत्र-शक्ति के बल पर दो किंजल्प पक्षियों को फंसाकर राजधानी को वापस लौट रहा

है। यह खबर सारी राजधानी में फैल गई। किंजल्प पक्षियों को देखने के लिए राजा के साथ जनता भी उत्सुक हो उठी।

इधर पद्मा ने अपने नौकरों द्वारा बन्दियों को गड्ढे से बाहर निकलवाया। उनके शरीरों पर तरह-तरह के रंग-बिरंगी पक्षियों के परों को चिपकवा दिया। दोनों को लकड़ी के एक कटघरे में बंद कराकर जंगल में पहुँचा दिया।

दूसरे दिन सवेरे यह खबर मिली कि राज पुरोहित किंजल्प पक्षियों के साथ हिमालयों से लौट आया है और राजधानी के बाहर ठहरा हुआ है। इस पर अनेक राज कर्मचारी तथा लोग भी राजा के साथ जंगल में पहुँचे। पुरोहित को कटघरे के साथ राजा के सामने लाया गया।

राज पुरोहित पुष्य ने राजा से निवेदन किया–"महाराज! आप इस किंजल्प पक्षियों के जोड़े को देखिए। इनमें एक मादा है और दूसरा नर है। दोनों मनुष्यों की भाषा बोलते हैं।" राजा ने कटघरे के निकट जाकर बड़ी देर तक पक्षियों को ध्यान से देखा। दोनों पक्षियों ने लज्जा के मारे अपने सिर झुकाये।

राजा बोले–"मुझे अद्‌भुत पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं। पक्षियों के पर चिपकाये हुए जयसेन और तटिल्लता दीख रहे हैं।"

"महाराज! किंजल्प पक्षियों के बारे में सही जानकारी रखनेवाले व्यक्ति हैं हमारे मंत्री उग्रसेन। वे ही आप को सारी बातें समझायेंगे।" पुरोहित ने कहा।

राजा ने तत्काल उग्रसेन को बुला भेजा। वह अपने पुत्र तथा दलालिन तटिल्लता को देख डर के मारे कांप उठा और शर्म के मारे सर झुकाकर मौन रहा।

इस पर पद्मा ने राजा को सारा वृत्तांत सुनाया। राजा ने पद्मा और उसके पति की तारीफ़ की। दुष्टों को सही सबक़ सिखाने के उपलक्ष्य में पद्मा का सत्कार किया। उसी वक़्त उग्रसेन को मंत्री के पद से हटाया। उसके पुत्र जयसेन तथा तटिल्लता को डांटकर भेज दिया।
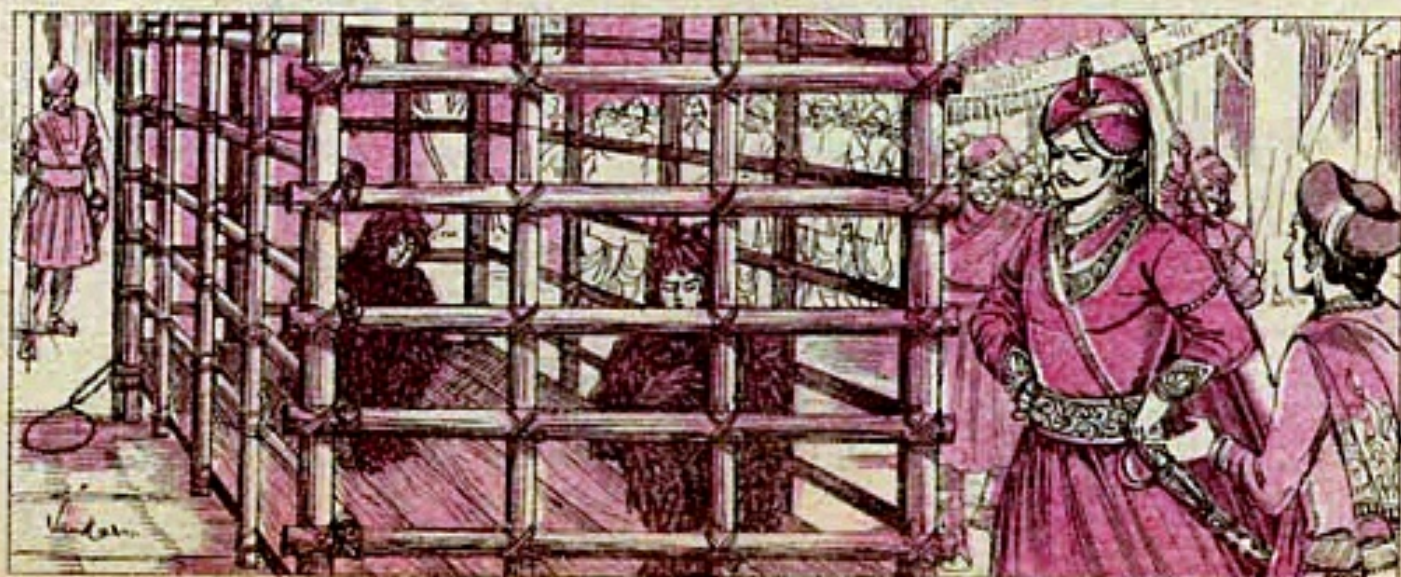
मृत्यु का भय

एक बार एक साधू के भक्त ने उसे भिक्षा पर बुलाया, मिष्टान्न खिलाकर पूछा–"महात्मा! सवेरे से लेकर संध्या तक अनेक पाप किये बिना इस दुनिया में जीना मुश्किल है। ऐसी हालत में आप पाप से दूर, निश्चल एवं पवित्र जीवन कैसे बिताते हैं? कृपया बताइये!"

"यह बात रहने दो! ठीक एक सप्ताह के अन्दर तुम्हारे घर में एक मृत्यु होनेवाली है!" यों समझा कर साधू चला गया।

भक्त डर गया। उसने अपने परिवार के सदस्यों को सविस्तार समझाया कि कौन-सा कर्ज कैसे चुकाना है, कौन-सा कर्ज कैसे वसूल करना है! तब वह जप, तप व अनुष्ठान में रात-दिन बिताने लगा। एक सप्ताह बीत गया। साधू का बताया दिन भी आ पहुँचा।

स्वामीजी को देखने भक्त घर से निकल ही रहा था, तभी साधू आ पहुँचा।

"बेटा, तुमने इस सप्ताह के अन्दर कितने पाप किये?" साधू ने पूछा।

"महात्मा! मृत्यु को सामने देख मैं कैसे पाप कर सकता हूँ? मैंने एक भी पाप नहीं किया।" भक्त ने उत्तर दिया।

"मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मर जाओगे! आज तुम्हारी गाय मर जाएगी! तुमने ही अपने सवाल का जवाब दिया। मेरे जैसे व्यक्ति पल भर के लिए मृत्यु को भूल नहीं सकते! इसीलिए पाप किये बिना पवित्र जीवन बिता सकते हैं।" साधू ने कहा।

षड़यंत्र

रामापुर के किसान भोले और अशिक्षित हैं। उनका कोई भी थोड़ा-सा उपकार करता तो उसके दुगुने व तिगुने प्रत्युपकार करते और सदा उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते! इन भोले किसानों को लूटनेवाले उस गाँव में तीन व्यक्ति थे।

एक था पटवारी कनकदास। खेतों के क्रय-विक्रय या दस्तावेज़ों के लेखन के समय वह कोई न कोई बहाना बनाकर कहा करता–"यह खेत इस तरह बेचा नहीं जा सकता। नये क़ानून के मुताबिक़ वारिस का यह अधिकार पत्र चलने का नही...ओह, इतनी देरी करके कर चुकाते हो, इसका जुर्माना लगता है।" यों समझाकर पटवारी भोले लोगों को लूटता, पर वह जनता को विश्वास दिलाता कि वह पाप से डरता है और ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास रखता है।

दूसरा व्यक्ति था–पटेल शंभुदास! वह गरीब लोगों को आफ़त के वक़्त ज़रूर उधार देता, धर्म-ब्याज के नाम से गलत हिसाब करके चक्रब्याज वसूल करता। वह सहानुभूति दिखाते कहता–"बेचारे, ये लोग बड़ी जरूरत न होती तो क़र्ज़ ही क्यों लेते? मैं क्या अपने साथ यह सारी संपत्ति थोड़े ही उठा ले जाता हूँ?"

तीसरा व्यक्ति वैद्य वरदाचारी था। वह छोटे-मोटे बुखारों के लिए भयंकर नाम गिनाता। साधारण बुखार को अपनी दवाइयों द्वारा प्रकोप करके आखिर कह देता–"अब मामूली दवाएँ देने से फ़ायदा नहीं, स्वर्ण-भस्म का प्रयोग करना ही पड़ेगा। मेरी मेहनत के लिए कुछ देने की कोई आवश्यकता नहीं है। कंड़ों तथा भस्म का पुट बनाने के लिए जो खर्च होगा, सो दे देते तो पर्याप्त है।"

बिनोद गुप्त

यों ये तीनों व्यक्ति गाँववालों को लूटा करते । उन्हीं दिनों में पटवारी का पुत्र नरहरि अचानक बीमार पड़ा । एक ओर उसकी शादी की तैयारियाँ चल रही थीं, इस आफ़त से घबराकर पटवारी ने वैद्य वरदाचारी को बुला भेजा ।

वरदाचारी ने नरहरि की नाड़ी की जांच करके अफ़सोस प्रकट करते हुए कहा—"पटवारी साहब! यह तो जहरीला बुखार है । विलंब करने से खतरा पैदा हो जाने की संभावना है । अगस्त्य जड़ी-बूटीवाले शास्त्र में बताये मुताबिक़ स्वर्ण भस्म का प्रयोग करना पड़ेगा । सिर्फ़ चार तोले सोने की जरूरत पड़ेगी ।"

अपने पुत्र की खाट के निकट खड़ी पटवारी की पत्नी कामाक्षी ने झट से अपने हाथ की सोने की चूड़ियाँ निकालकर वैद्य के हाथ में रख दी । पत्नी के तानों के डर से पटवारी चुप रहा ।

एक सप्ताह तक नरहरि की बीमारी बढ़ती गई, दूसरे सप्ताह में वह बुखार एक दम उतर गया । वरदाचारी ने इसे अपने स्वर्ण भस्म का प्रभाव बताया ।

थोड़े दिन बीत गये । एक दिन आधी रात को वरदाचारी हाँफते पटवारी के घर आया, बोला—"पटवारी साहब! मेरे घर में चोर घुसकर चांदी-सोने के साथ मेरी बेटी लक्ष्मी के नाम पर लिखे गये पांच एकड़ नारियल के बगीचे से संबन्धी दस्तावेज़ भी उठा ले गये हैं । मेरी बहन ने मरते वक़्त मेरी बेटी के नाम वह बगीचा लिखवा दिया था । मैं वह बगीचा उसकी शादी के वक़्त दहेज़ के रूप में देना चाहता था ।"

"वरदाचारीजी! हमारे पास शिकायतें आई हैं कि वह दस्तावेज़ जाली है । उस दस्तावेज़ की सृष्टि आप ने ही की और आप की बड़ी बहन के मरने पर उसके अंगूठे की छाप आप ने ही करवा ली है । दारोगा ने मेरे पास चिट्ठी भेजी है कि इस संबंध में गुप्त रूप से दरियाफ़्त करके रिपोर्ट भेज दूं ।" पटवारी ने समझाया ।

वरदाचारी घबरा गया। उसने रोनी सूरत बनाकर कहा–"जायदाद के लोभ में पड़कर मैंने यह अपराध किया है। रिश्तेदारों के द्वारा जायदाद के हड़पने से बचने के लए मैंने यह काम किया है। अब आप ही को मेरा उद्धार करना होगा।"

पटवारी थोड़ी देर तक गंभीरतापूर्वक सोचता रहा, तब बोला–"सुनिये! आप की बेटी के नाम पर लिखा गया दस्तावेज़ दूसरों के लिए किसी भी प्रकार से प्राप्त नहीं हो सकता। उसके खो जाने से नारियल के बगीचे पर से आप का अधिकार जाता रहेगा। बस! मैं राजधानी में जाकर दारोगा को घूस दे आप के दस्तावेज़ को चुरानेवाले को पकड़वा दूंगा, फिर से वह दस्तावेज़ आप को निश्चय ही दिलवा दूंगा। मगर यह बात तीसरे के कान में पड़नी नहीं चाहिए। इसके वास्ते काफ़ी खर्च होगा। समझें!"

"मेरा चांदी-सोना चोरी गया। शंभुदास के यहाँ से एक हज़ार रुपये ब्याज पर ले लूँगा। इस आफ़त से मेरी रक्षा कीजिए।" वरदाचारी ने मिन्नत की।

"वरदाचारीजी! एक हज़ार से काम न चलेगा। दारोगा की बात तो आप जानते ही है! मैं आप को एक ऐसा उपाय बताऊँगा जिससे आप का नुक़सान भी न होगा और मैं भी श्रम से बच जाऊँगा। क्या आप इसे मानने के लिए तैयार हैं?"
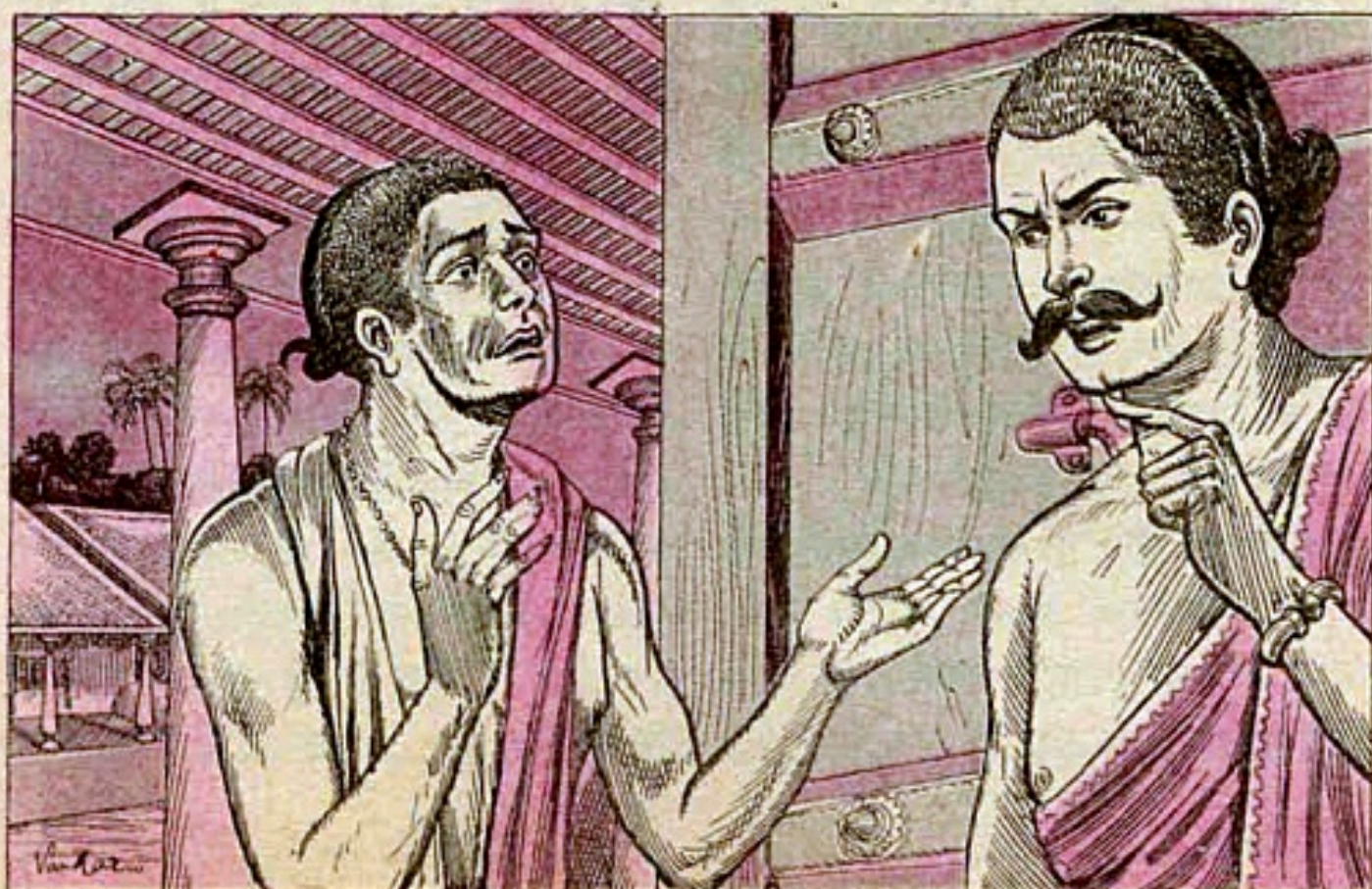
पटवारी ने कहा। वरदाचारी ने झट मान लिया।

दूसरे दिन आधी रात के वक़्त वरदाचारी की झोंपड़ी जल उठी। गाँववालों ने आग बुझाई, मगर घर जलकर राख हो गया।

वरदाचारी की पत्नी छाती पीटते रो पड़ी–"हे भगवान! मेरा घर जल गया। लड़की की शादी के वास्ते हमने जो सारा सामान इकट्ठा कर रखा था, सब कुछ जलकर राख हो गया। अब हम अपनी बेटी की शादी कैसे कर सकते हैं?"

"सुनो, अब हमें इस गाँव में पल भर भी नहीं रहना चाहिए! एक कौड़ी भी मेहनत के रूप में लिये बिना मैं गाँववालों का इलाज करता रहा। आखिर ये लोग मेरे ही घर जला डालते हैं?" यों कहते वरदाचारी अपनी पत्नी व पुत्री के साथ गाँव छोड़कर जाने को तैयार हुआ।

गाँव के लोग चकित हो उस दृश्य को देखते रहें। तब पटेल साहब उच्च स्वर में बोला–"वरदाचारीजी! आप रुक जाइए! किसी दुष्ट ने यह काम किया तो सारे गाँव के लोगों की निंदा करना उचित नहीं है। हम सब चन्दा देकर आप के वास्ते एक ऐसा पक्का मकान बनवाकर देंगे जिससे आप के लिए आग और चोरों का भी भय बना न रहेगा। आप चले जायेंगे तो इस गाँव के लोगों का इलाज कौन करेगा?" पर वरदाचारी मौन रहा।

पटेल ने लोगों की तरफ़ मुड़कर पूछा– "क्या मेरा कहना ठीक है? आप सब इसे मानने के लिए तैयार हैं?"

सबने आवेश में आकर सर हिलाये।

"तब तो आप में से कौन कितना चन्दा देना चाहते हैं, अभी बता दीजिए! मैं आप को उधार दूंगा। फ़सल के आने पर आप मुझे धर्म-ब्याज सहित मेरा ऋण चुका सकते हैं।" पटेल ने कहा।

किसानों ने होड़ लगाकर अपने अपने चन्दे की घोषणा की। मिनटों में एक पक्का मकान बनाने के लिए आवश्यक धन चन्दा के द्वारा वसूल हुआ। राज और अन्य कर्मचारी व मजदूरों ने कम मजदूरी लेकर दो महीने के अन्दर वरदाचारी के लिए पक्का मकान बनवाकर दिया।

इसके एक महीने बाद पटवारी कनकदास के पुत्र तथा वैद्य वरदाचारी की पुत्री का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ। वरदाचारी रामापुर में ही स्थिर निवास बनाकर रह जाये, इस ख्याल से शंभुदास ने ही यह विवाह तै कराया था। दोनों को उन्होंने ही मनवा लिया था।

गाँववालों ने सह सोचकर विवाह के समय दिल खोलकर भेंट-उपहार दिये कि सवेरे जागते ही हमें इन तीनों महाशयों की सहायता की ज़रूरत पड़ती है। इनकी मदद के बिना हम लोग जी नहीं सकते!" इसके लिए आवश्यक धन शंभुदास ने ही कर्ज़ के रूप में दिया था।

विवाह के तीसरे दिन पटवारी कनकदास राजधानी गया, लौटकर बोला–"वरदाचारी, देखिये, यह मेरी बहू का अधिकार पत्र दस्तावेज़ है। मैंने बड़ी मुश्किल से इसे प्राप्त कर लिया है।"

मगर कोई यह रहस्य नहीं जानता था कि कनकदास ने एक योजना बनाकर पहले ही उस दस्तावेज़ को चुरा लिया था।

"वाह! समधी साहब! आप तो असाधारण बुद्धिमान हैं! आखिर आप ने इसे साध लिया।" इन शब्दों के साथ वरदाचारी ने कनकदास की प्रशंसा की।

कपट भक्ति

जगदीश नटखट लड़का था। उसके घर के समीप में एक मंदिर था। वहाँ पर अकसर उत्सव व भजन हुआ करते थे। जगदीश सदा उनमें भाग लेता था। पुजारी ने सोचा कि यह बालक बड़ा भक्त है। उसे प्रसाद वगैरह खूब खिलाया करता था।

जगदीश ने मौक़ा देख एक दिन मंदिर का सोने का लोटा चुराया। पुजारी ने इस जान लिया, फिर भी वह चुप रहा। इससे जगदीश का हौसला बढ़ गया। एक दिन उसने पुजारी के पास बहुत-सा धन देख पूछा—"यह धन आप को कहाँ से मिला?"

"मैंने भगवान का किरीट बेच दिया। मंदिर का निधिपालक मेरा कुछ बिगाड़ न सकेगा। वे भी तो भगवान की संपत्ति हड़पते हैं!" पुजारी ने जवाब दिया।

इस पर जगदीश दौड़कर घर पहुँचा। सोने का लोटा लाकर पुजारी के हाथ देते हुए बोला—"आप इसे बेच डालिये। जो कुछ मिलेगा, हम दोनों आधा-आधा बाँट लेंगे।"

पुजारी ने लोटा लेकर मंदिर के अन्दर रख दिया और डाँटकर कहा—"अबे, तेरी चोरी पकड़ने के लिए मैं झूठ बोला। हममें से कोई चोर नहीं हैं। तू आइंदा इस मंदिर की ओर न पटक! वरना तेरे पैर तोड़ दूंगा।"
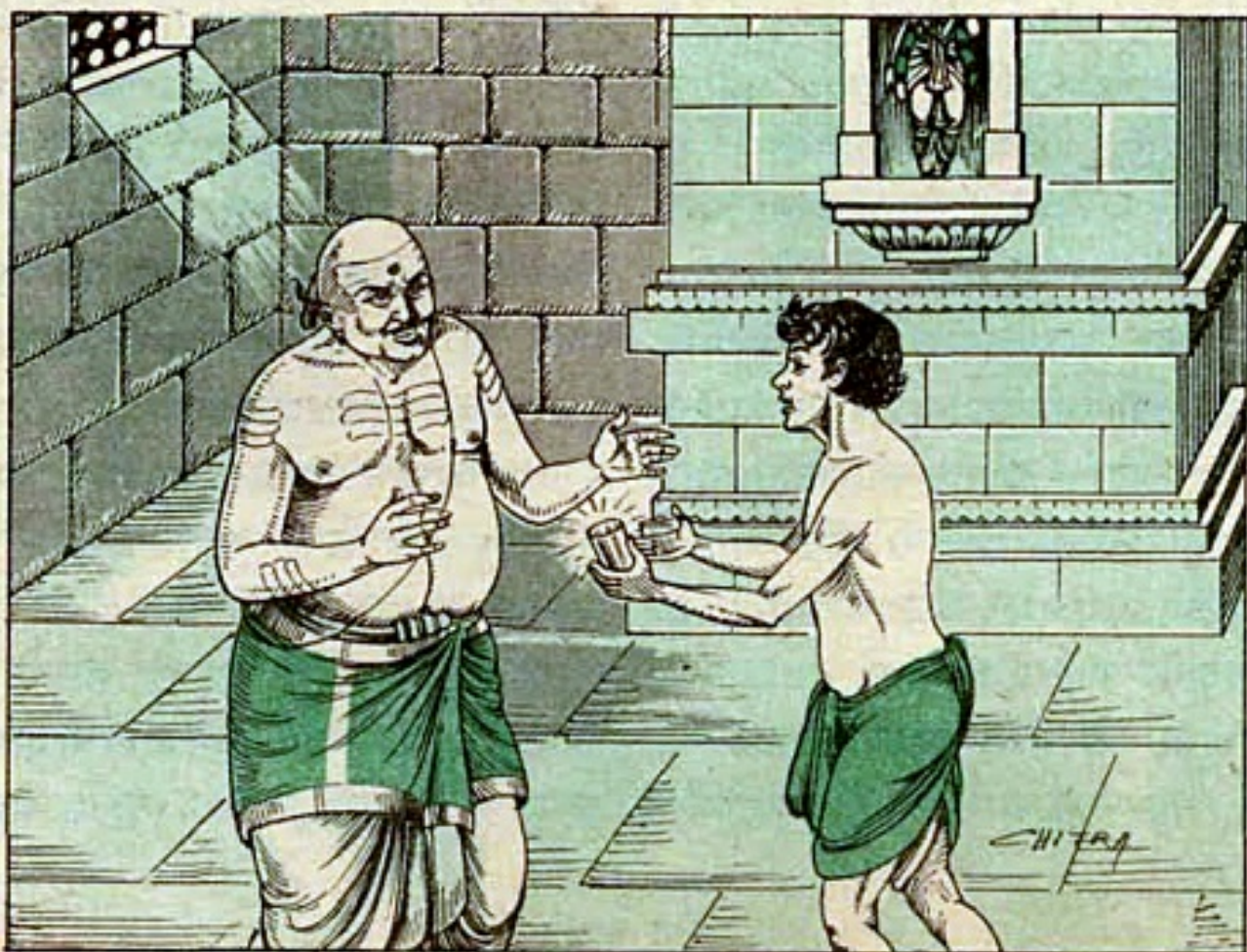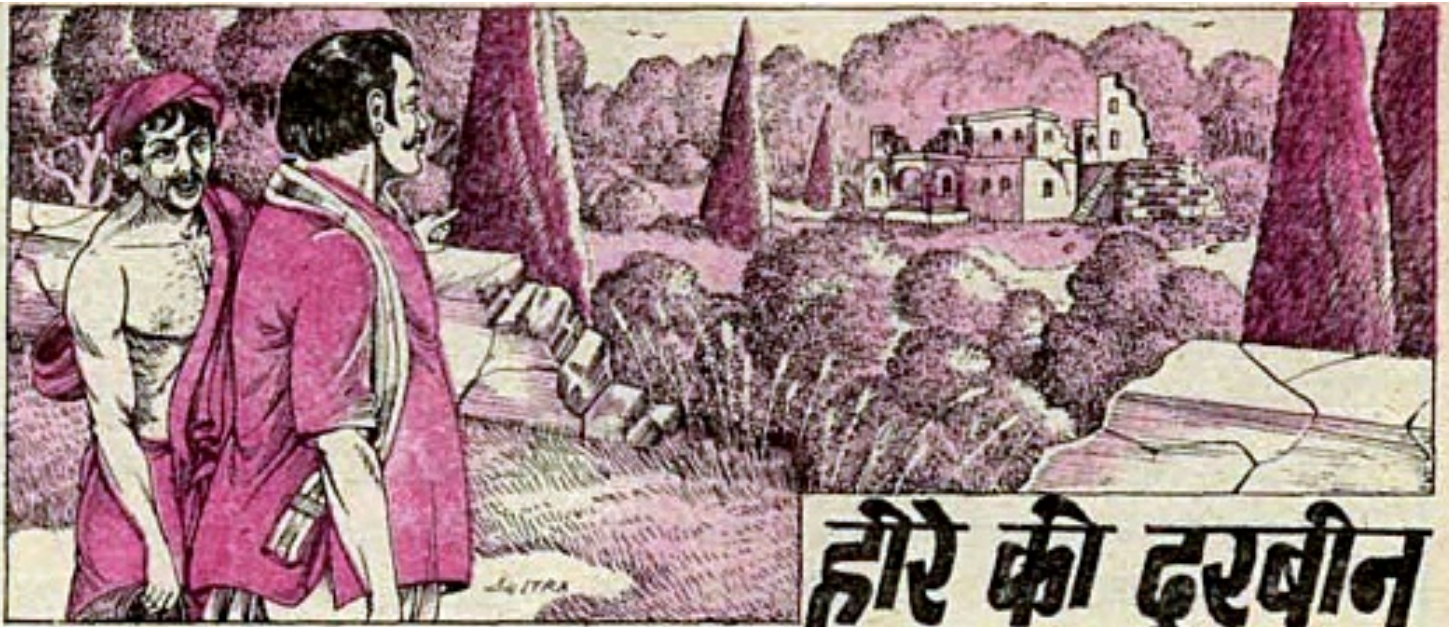
हीरे की दूरबीन

एक शहर में श्रीगुप्त नामक एक व्यापारी था। एक बार श्रीगुप्त के रिश्तेदारों के घर में एक शादी हो रही थी। उसके रिश्तेदार एक गाँव में थे, इसलिए श्रीगुप्त पैदल ही उस गाँव की ओर चल पड़ा।

रास्ते में रंगनाथ नामक एक व्यक्ति से उसकी मुलाक़ात हुई। रंगनाथ शहर के निकट के एक गाँव का निवासी था। वह अपने खेत में तरकारी पैदा करता था। प्रति दिन शहर में जाकर उन्हें बेच देता और संध्या तक अपने गाँव को लौट आता। श्रीगुप्त रंगनाथ को जानता न था, पर रंगनाथ श्रीगुप्त को जानता था।

वे दोनों जिस रास्ते से गाँव की ओर जा रहे थे, उस रास्ते से हटकर थोड़ी दूर पर भूतों का एक महल था। एक जमाने में वह महल एक जमीन्दार का था। मगर एक बार उसके रिश्तेदारों ने गुंडों की मदद से जमीन्दार के महल पर हमला किया और जमीन्दार के परिवार की हत्या करके घर लूटने का प्रयत्न किया। उस समय जमीन्दार के घर के कुछ लोग बचकर प्राणों के साथ भाग निकले; मगर वह महल बुरी तरह से लूटा गया। धीरे धीरे वह महल उजड़ गया। लोगों के बीच यह अफवाह फैल गई कि उन खण्डहरों में भूतों का निवास है, अलावा इसके वह महल रास्ते से हटकर थोड़ी दूर पर था, इस कारण किसी ने उधर जाने का साहस न किया।

उस महल के निकट पहुँचने पर रंगनाथ ने श्रीगुप्त से कहा–"महाशय, प्रति दिन मेरे मन में यह इच्छा होती है कि उस उजड़े हुए महल को देख लूँ, लेकिन इस विचार से मैं अकेले उसमें जाने से संकोच करता हूँ कि कोई देख ले तो न मालूम

सीमा अग्रवाल

क्या सोचे! इस वक़्त तो हम दो हैं। इसलिए क्या उस महल को देख लें?"

श्रीगुप्त ने हँसते हुए कहा–"तुम यह क्यों नहीं कहते कि भूतों के डर से उसमें आज तक नहीं गये?"

"मुझे भूतों का डर तो नहीं सताता। भूत-प्रेतों के प्रति मेरे मन में विश्वास भी नहीं है। चलिए, अन्दर जाकर देख लें!" रंगनाथ ने कहा।

इसके बाद दोनों उस उजड़े महल के भीतर गये। महल की कुछ दीवारें वर्षा में भीगकर ढह गई थीं। उसमें चमगादड़ों ने अपना निवास बना लिया था। सब जगह मकड़ी के जाले फैले हुए थे। देखने में वह महल अत्यंत भयंकर लग रहा था। फिर भी दोनों हिम्मत करके महल के भीतर के कमरों में पहुँचे।

उसी वक़्त महल का प्रधान द्वार टूटकर गिर पड़ा। श्रीगुप्त डर के मारे कांपते हुए बोला–"सुनो भाई! भूत हम दोनों को यहीं पर प्राणों के साथ गाड़कर रख देंगे। तुम्हारी वजह से इसमें प्रवेश करके मैंने जान पर आफ़त मोल ली है।"

रंगनाथ ने मुस्कुराकर कहा–"महाशय, यह करनी न भूतों की है और न शैतानों की ही। रात को पानी बरसा था, इस कारण दीवारें भीगकर ढह गई हैं। इस बात के लिए भगवान के प्रति शुक्रगुजार है कि वे टूटी दीवारें हम पर नहीं गिरीं। यक़ीन मानो, हमें कोई खतरा नहीं है।"

"अच्छी बात है! यहाँ से हमारे बाहर निकलने का कोई उपाय करो।" श्रीगुप्त ने कहा।

रंगनाथ बड़ी युक्ति के साथ टूटी दीवारों पर चढ़कर बाहर निकल आया। उसके पीछे श्रीगुप्त भी आ पहुँचा।

एक जगह रंगनाथ को टूटी दीवार में एक छोटा सा लोटा मिला। उसके मुंह पर तांबे का ढक्कन बंद था। रंगनाथ ने ढक्कन निकालकर लोटे को औंधे मुंह उलट दिया। उसमें से कुछ पत्थर नीचे

गिरे। श्रीगुप्त ने उन्हें हाथ में लेकर तौलकर भांप लिया कि वे क़ीमती पत्थर हैं। उसके मन में यह लोभ पैदा हुआ कि रंगनाथ को धोखा देकर उन्हें हड़प ले।

"सुनो! सिंह द्वार के भीतर ऐसे तीन या पाँच गाड़कर रख देते हैं। कहा जाता है कि ऐसा करने पर घर के लिए शुभ होता है। सावधानी से देख लो, शायद और मिल जायें!" श्रीगुप्त ने कहा।

रंगनाथ फिर से टूटी दीवार पर चढ़ गया, थोड़ी देर बाद खाली हाथ लौट आया। इस बीच श्रीगुप्त ने लोटे के भीतर के पत्थर हड़प लिये और उनकी जगह साधारण पत्थर डाल दिये।

रंगनाथ के लौटते ही उन पत्थरों को खण्डहरों में फेंकते हुए श्रीगुप्त बोल उठा—"ये तो पंच लिंग हैं। किसको चाहिए पत्थर के ये कमबख़्त लिंग?" इन शब्दों के साथ लोटा रंगनाथ के हाथ थमा दिया।

श्रीगुप्त ने जो पत्थर फेंके थे, उनमें से एक रंगनाथ के पैरों के निकट गिरा। मगर उसके बाज़ू में ही रंगनाथ को एक और पत्थर दिखाई दिया जो लोटे के अन्दर का न था।

"एक कमबख़्त लिंग को अपनी यादगारी के रूप में रख लेता हूँ।" यों कहते रंगनाथ ने वह पत्थर हाथ में लिया।

रंगनाथ ने भांप लिया कि श्रीगुप्त ने लोटे के भीतर के पत्थर हड़पने के लिए उसे खण्डहरों के बीच भेज दिया है। मगर उसने यह बात प्रकट होने नहीं दी।

इसके बाद दोनों अपने अपने रास्ते चले गये। दूसरे दिन रंगनाथ अपनी तरकारियाँ बेचकर श्रीगुप्त को देखने उसके घर पहुँचा। रंगनाथ को देखते ही श्रीगुप्त घबरा गया। इस पर रंगनाथ का संदेह और बढ़ गया।

शहर में रंगनाथ का एक दोस्त था। जो नाटक खेला करता था। एक जमाने में उसके परिवार के लोग संपन्न थे। उस व्यक्ति का नाम बसंतराज था,

रंगनाथ ने सारा समाचार अपने दोस्त वसंतराज को कह सुनाया और बताया कि श्रीगुप्त को इसका अच्छा सबक़ सिखलाना चाहिए। वसंतराज ने इसके वास्ते एक बढ़िया उपाय सोचा।

उसी दिन संध्या को वसंतराज क़ीमती पोशाक पहनकर एक व्यापारी के वेश में श्रीगुप्त की दूकान पर पहुँचा। श्रीगुप्त उस समय खण्डहरों में प्राप्त पत्थरों का सान धरवा रहा था। वास्तव में वे पत्थर कच्चे हीरे थे। पुराने होने के कारण मिट्टी में दबकर साधारण पत्थरों जैसे दीख रहे थे।

वसंतराज ने श्रीगुप्त से पूछा—"ये पत्थर हीरे हैं न? हमारे हीरों की अरब में बड़ी माँग है। मैंने अरब देशों में हीरे बेचकर लाखों रुपये कमाये हैं?"

"हीरों का मूल्य कैसे आंका जाता है?" श्रीगुप्त ने वसंतराज से पूछा।

इसके वास्ते हीरे की दूरबीन नामक एक उपकरण है। हीरों को पानी के एक बर्तन में डालकर दिन भर रखना चाहिए। आप चाहेंगे तो मैं वह उपकरण एक दिन के लिए आप को दे सकता हूँ।" वसंतराज ने कहा।

इस पर वसंतराज पर श्रीगुप्त का विश्वास जम गया। उसने अपने हीरे वसंतराज को दिखाकर पूछा—"आप की दूरबीन में इसका मूल्य जाना जा सकता है?" वसंतराज ने हीरे अपने हाथ में लेकर हिलाकर देखा—"जरूर जाना जा सकता है। ये तो पुराने जमाने के हीरे हैं। ऐसे हीरे आजकल प्राप्त नहीं होते।"

"क्या आप दूरबीन उचित मूल्य पर मुझे बेच सकते हैं?" श्रीगुप्त ने पूछा।

"असंभव है। दुनिया भर में ऐसे उपकरण चार ही हैं। उनमें से एक मेरे पास है।" इन शब्दों के साथ वसंतराज ने अपने साथ लाई हुई बड़ी पेटी में से एक विभिन्न रंगोंवाली छोटी पेटी खोल दी और कहा—"आप अपने हीरे इसमें डाल दीजिए।"

श्रीगुप्त ने हीरे उसमें डाल दिये। वसंतराज ने झट से पेटी बंद की। बड़ी पेटी में से थोड़ा भस्म निकालकर श्रीगुप्त के हाथ दिया और कहा–"आप अपने हाथ से यह भस्म इस पेटी पर छिड़क दीजिए!" श्रीगुप्त ने वैसा किया।

इसके बाद वसंतराज ने बड़ी पेटी में ताला लगाया। छोटी पेटी श्रीगुप्त के हाथ देकर कहा–"इसे बर्तन में रखकर पानी भर दीजिए। मैं कल इसी वक़्त आकर अपनी पेटी ले जाऊँगा।" यों समझाकर वसंतराज चला गया।

वसंतराज श्रीगुप्त के घर से सीधे रंगनाथ के घर पहुँचा और हीरे उसे सौंप दिया। रंगनाथ ने कहा–"हम ये हीरे बेचकर आधा आधा बांट लेंगे।"

"एक जमाने में इन्हीं हीरों के वास्ते हत्याएँ हो गई हैं। एक भरा-पूरा परिवार बिखर गया है।" वसंतराज ने कहा।

"यह तुम्हें कैसे मालूम है?" रंगनाथ ने पूछा।

"ये हीरे मेरे दादा ने कमाकर अपने वंश का विनाश मोल लिया है।" वसंतराज ने दुखी स्वर में उत्तर दिया।

"तब तो तुम्हीं इन्हें रख लो।" रंगनाथ ने उदारतापूर्वक कहा।

"रंगनाथ! यह तुम क्या कहते हो? तुम्हारी ही वजह से इनका पता चला है। हमारे वंश के विनाश के बाद इन हीरों के प्रति मेरा शौक जाता रहा। तुम्हारे कथनानुसार हम इन्हें बेंचकर जो धन प्राप्त होगा, आधा आधा बांट लेंगे।" वसंतराज ने कहा।

दूसरे दिन श्रीगुप्त ने पानी में से छोटी पेटी निकालकर देखा। उसमें केवल मामूली पत्थर मिले। श्रीगुप्त यह सोचकर रो पड़ा कि उसके पास जो नकली व्यापारी आया था, उसने भस्म देते वक़्त हीरों की उसकी पेटी को बदल लिया है।

श्रीगुप्त के देखते रंगनाथ ने शहर में एक बड़ा महल बनवाया और व्यापार करते लाखों रुपये कमाये।

राम-रावण के युद्ध को देखने आये हुए देवता तथा गंधर्व श्री रामचन्द्र के पराक्रम ओर वानरों के द्वारा किये गये भीषण युद्ध की चर्चा करते हुए अपने प्रदेशों में लौट गये ।

श्री रामचन्द्र ने मातलि का सत्कार करके इन्द्र के रथ के साथ उसे स्वर्ग में भेज दिया । इसके उपरांत लक्ष्मण और सुग्रीव को साथ ले अपने शिविर में लौट आये । लक्ष्मण को आदेश दिया–" लक्ष्मण, अब हमें विभीषण का लंका के राजा के रूप में अभिषेक करना होगा, तुम आवश्यक प्रबंध करा दो ।"

लक्ष्मण ने वानरों के हाथ स्वर्ण कलश देकर समुद्र जल मँगवाया । फिर स्वयं विभीषण को ले जाकर एक सिंहासन पर बिठा कर जल से उसका अभिषेक किया । विभीषण के मंत्री तथा उसके प्रति भक्ति रखनेवाले राक्षसों ने जयनाद किये । उस समय विभीषण ने राक्षसों का भय दूर करके उन्हें वचन दिया कि भविष्य में लंका नगर सुख एवं शांति के साथ विकास को प्राप्त होगा । राक्षस लोगों ने विभीषण को मूल्यवान वस्तुएँ भेंट की । उस शुभ अवसर पर विभीषण ने कृतज्ञतापूर्वक राम-लक्ष्मणों को अनेक दिव्य वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्रदान कीं ।

विभीषण ने अपनी कामना की पूर्ति होने के कारण कृतज्ञतापूर्वक जो उपहार दिये उन्हें ग्रहण करने की रामचन्द्रजी के

३६. विभीषण का राज्याभिषेक

मन में इच्छा न थी, फिर भी उसको संतुष्ट करने के लिए रामचन्द्रजी ने उन भेटों को स्वीकार कर लिया।

इसके उपरांत अपने समीप में हाथ जोड़ कर महा पर्वत की भांति खड़े हुए हनुमान से रामचन्द्रजी बोले–"वीर हनुमान, तुम राक्षस राजा विभीषण की अनुमति लेकर लंका नगर में जाओ, रावण के महल में स्थित सीताजी को विजयाभिवन्दन दो, यह भी बताओ कि मेरे हाथों में रावण का वध हो चुका है और मैं लक्ष्मण तथा सुग्रीव के साथ हूँ। तुम यह शुभ समाचार उन्हें सुनाकर उनके कुशल-क्षेम जानकर लौट आओ।"

रामचन्द्रजी का आदेश पाकर मार्ग मध्य में राक्षसों का आदर प्राप्त करते हुए हनुमान ने लंका नगर में प्रवेश किया। उसने रावण के महल के प्रांगण में प्रवेश करके एक वृक्ष के नीचे राक्षस नारियों के बीच चिंतामग्न बैठी हुई सीताजी को देखा।

हनुमान ने सीताजी के निकट जाकर अपना परिचय दिया, प्रणाम करके हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। सीताजी ने पहले हनुमान को नहीं पहचाना। पर बाद को स्मरण करके वह अत्यानंदित हुई। सीताजी में परिवर्तन देख हनुमान ने उन्हें रामचन्द्रजी का संदेशा यों सुनाया :

"सीता देवीजी! रामचन्द्रजी कुशल हैं। वे विभीषण एवं सुग्रीव के साथ वानर सेना के बीच विराजमान हैं। आपसे यह बताने को कहा है कि वे शत्रु का संहार करके, अपने आशय की पूर्ति कर कुशल हैं। रावण का वध करने में रामचन्द्रजी को विभीषण की सहायता, वानर वीरों का पराक्रम तथा लक्ष्मण का नैतिक बल भी सहायक हुए हैं। रामचन्द्रजी ने आपका कुशल-क्षेम जानकर यों बताने का मुझे आदेश दिया है–"मैं तुम्हें शुभ समाचार सुनाकर संतोष प्रदान करूँगा। पातिव्रत्य का धर्म जाननेवाली तुम मेरे भाग्यवश जीवित हो! मेरे पराक्रम

है ।" राक्षस नारियों का संहार करने के लिए हनुमान का मन उबलने लगा ।

सीताजी ने इसे भांप कर हनुमान से कहा–"ये राक्षस नारियाँ रावण की दासियाँ हैं। राजा की सेवा करते जोनेवली हैं। राजा के आदेश का इन्हें पालन करना चाहिए न? ऐसा न करने पर क्या ये दण्ड न पायेंगी? इसलिए इन पर कुपित हो जाना अन्याय है । यही सोचना चाहिए कि मेरा प्रारब्ध ठीक न था और मैंने पूर्व जन्म में जो पाप किया था, उनके परिणाम स्वरूप मैंने इस जन्म में ये कष्ट भोगे हैं । इसलिए इन राक्षस नारियों के प्रति मेरे मन में ज़रा भी क्रोध नहीं है । रावण तो मर गये हैं । इसलिए ये नारियाँ अब मेरा अहित नहीं कर सकतीं; यदि यह मान ले कि अपनी दुर्बुद्धि से प्रेरित होकर इन राक्षस नारिओं ने मुझे सताया है, फिर भी इन्हें दण्ड देना उचित नहीं है ।"

ये शब्द सुनकर हनुमान सीताजी की प्रशंसा करते बोला–"आप सब प्रकार से रामचन्द्रजी के योग्य पत्नी हैं। आप रामचन्द्रजी को अपना संदेशा सुनाकर मुझे भिजवा दीजिए ।"

सीताजी बोलीं–"मेरे मन में अपने पतिदेव रामचन्द्रजी को देखने की प्रबल इच्छा है ।"

यह संदेशा लेकर हनुमान शीघ्र गति से रामचन्द्रजी के पास लौट आया । उसने रामचन्द्रजी से कहा–"हम लोगों ने जिनके वास्ते इस सेतु का निर्माण करके ऐसा भीषण युद्ध किया है, उन सीतादेवी के मैंने दर्शन किये । उन्होंने मुझे पहचान लिया है । हमारी विजय पर वे अति प्रसन्न हैं । उन्होंने रावण का वध करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण को देखने की इच्छा व्यक्त की है ।"

ये बातें सुनने पर रामचन्द्रजी की आँखें सजल हो उठीं । फिर बोले–"इतने

वर्षों तक रावण के महल में रहनेवाली नारी को ग्रहण करूँ तो दुनियाँ मेरी निंदा करेगी। पर निर्दोष सीताजी को त्याग दूँ तो मैं पाप का भागी बन जाऍगा। अब मैं क्या करूँ?"

इसके बाद गहरी साँस ले रामचन्द्रजी समीप में स्थित विभीषण से बोले— "विभीषण, तुम सीताजी का अभ्यंगन स्नान करवा कर उनके शरीर पर चन्दन मलवाने के लिए दासियों को आदेश दो। फिर सुंदर आभूषणों के द्वारा उन्हें सुसज्जित कराकर यहाँ पर ले आओ।"

रामचन्द्रजी का आदेश पाकर विभीषण उसी वक़्त लंका नगर में पहुँचा। अपने अंतःपुर की नारियों के द्वारा सीताजी को समाचार भेजा कि रामचन्द्रजी उन्हें देखना चाहते हैं, इसलिए वे स्नान करके आभूषण धारण कर आ जावें।

इस पर सीताजी ने विभीषण को खबर भेज दी कि वह इसी रूप में इसी वक़्त अपने पति को देखना चाहती है।

विभीषण ने समझाया कि रामचन्द्रजी के विचारों के अनुरूप होना चाहिए। इस पर सीताजी ने मान लिया।

इसके बाद विभीषण ने राक्षस नारियों के द्वारा सीताजी को नहलवा कर, शरीर पर चन्दन मलवाया। सुंदर आभूषण एवं

दिव्य वस्त्र धारण करा कर एक पालकी में बिठाया, तब अनेक राक्षसों के साथ उन्हें रामचन्द्रजी के पास भेजा।

तब जाकर विभीषण रामचन्द्रजी बोला— "रामचन्द्रजी! मैं सीताजी को लिवा लाया हूँ।" यह समाचार जानकर भी रामचन्द्रजी चिंता मग्न बैठे रहें। उन्हें एक ही साथ तीन प्रकार के भाव सताने लगे—पहला यह था कि अनेक वर्षों के बाद सीताजी उन्हें दिखाई दे रही हैं। दूसरा कि उन्हें कैसे त्याग दे? तीसरा इतने वर्षों तक राक्षस के महल में रहनेवाली नारी को कैसे स्वीकार करें, इस बात का रोष।

में सीताजी के प्रति कोई प्रेम भाव नहीं हैं, वे बड़े दुखी हुए। साथ ही उनकी मुखाकृति देखने पर उन्हें भयंकर प्रतीत हुआ।

सीताजी लज्जावश सिकुड़ते हुए विभीषण के साथ रामचन्द्रजी के सामने आईं। भारी भीड़ से घिरी रहने के कारण वह अपने आँचल को मुँह पर ढककर रोते हुए बोलीं–"हे आर्यपुत्र!" उसी वक़्त सीताजी के मन में कई वर्ष बाद अपने पति को देखने का आनंद हुआ। उसका दुख क्रमशः जाता रहा।

पर सीताजी को देखते ही रामचन्द्रजी के मन में क्रोध उत्पन्न हुआ। वे बोले– "सीताजी, युद्ध में शत्रु का वध करके तुम्हे मुक्त किया और मैंने अपने पौरुष को साबित किया। शत्रु का गर्व चूर करके मेरे प्रति उसने जो अपमान किया था, उसका प्रतीकार किया। मेरा प्रयत्न सफल हो गया है। मेरी शपथ से मुझे मुक्ति मिल गई है। रावण तुम्हें उठा ले गया था, जिससे मेरा जो अपमान हुआ, उसे मैंने धो लिया है। हनुमान का समुद्र पार करना, लंकादहन करना तथा अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्य अब सफल साबित हुए हैं। इसी प्रकार सुग्रीव ने युद्ध में मेरी सहायता की, वह भी फलीभूत हुई। मुझ पर अपार विश्वास करके मेरे

फिर थोड़ी देर तक सोचकर रामचन्द्रजी ने विभीषण से कहा–"विभीषण! तुम सीताजी को मेरे साम ो ले आओ।"

विभीषण ने दण्डधारियों के द्वारा वहाँ पर इकट्ठे हुए वानर एवं भल्लूक वीरों को दूर हटवा दिया। रामचन्द्रजी ने इसे देख उन्हें हटाने से मना किया, तब कहा– "ये लोग पराये नहीं हैं; मेरे ही सहायक हैं। इन्हें क्यों भगा रहे हो? इन्हें भी सीताजी को देखने दो!"

विभीषण पछताते हुए सीताजी को रामचन्द्रजी के पास ले आया।

रामचन्द्रजी के वचन सुनने पर लक्ष्मण और सुग्रीव को लगा कि रामचन्द्रजी के मन
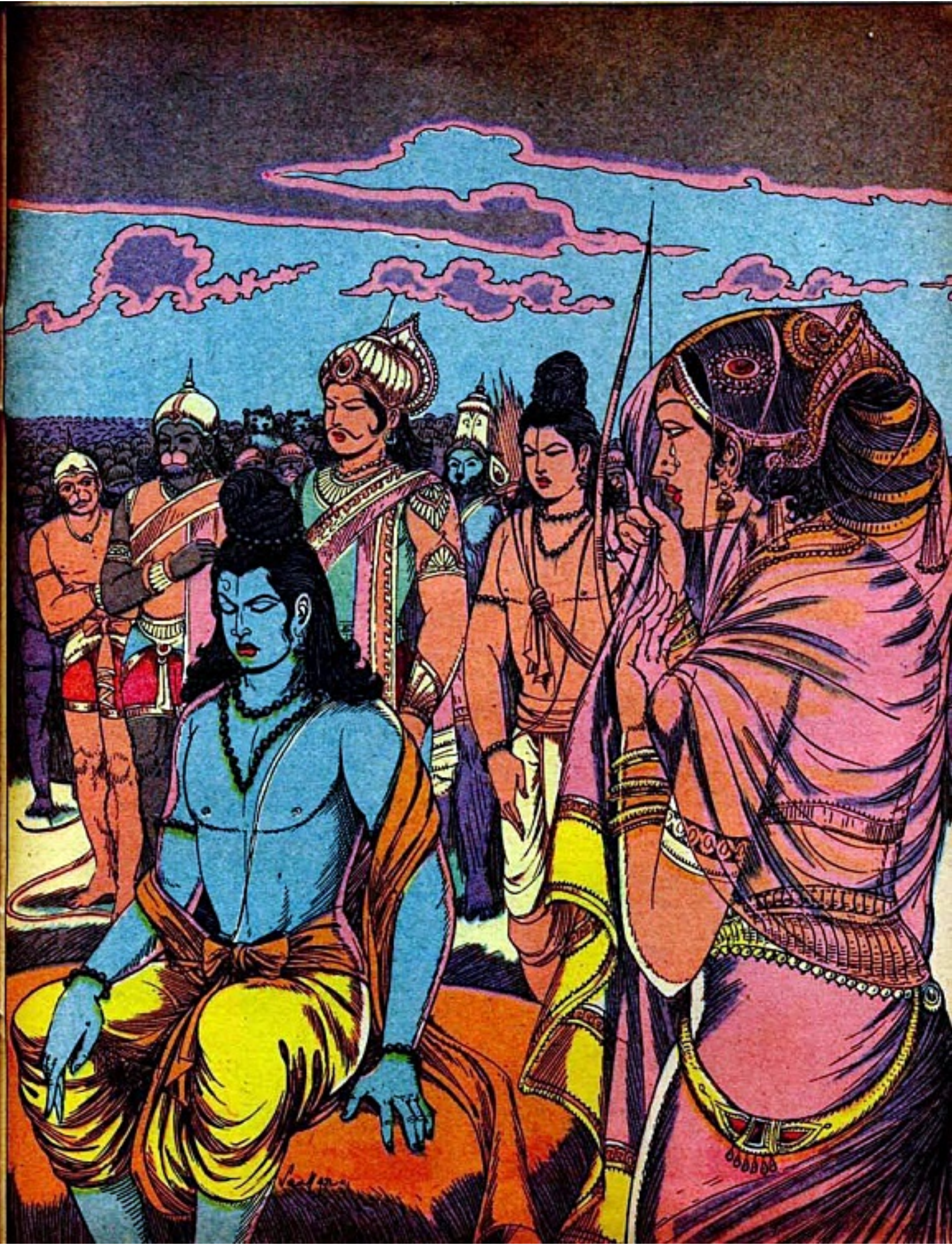
आश्रय में आनेवाले विभीषण का श्रम भी सफल हो गया।"

पर रामचन्द्रजी ने सीताजी के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा, इस पर उनका दुख उमड़ पड़ा। उनके दुख को देख रामचन्द्र का क्रोध बढ़ता गया। उन्होंने क्रोधित हो कहा–"सीते, अपमान का जो शिकार हुआ, उसके लिए जो कुछ करना था, मैंने किया। मगर याद रखो, यह सब मैंने तुम्हारे वास्ते नहीं किया है, सदाचार के अनुसार तुम मेरे विपरीत मानवी हो! इसलिए मैं तुम्हें अनुमति दे रहा हूँ, तुम जहाँ जाना चाहो, जा सकती हो। बहुत समय तक पराये पुरुष के घर रहनेवाली नारी को पराक्रम एवं आत्माभिमान रखनेवाला पुरुष कैसे स्वीकार करेगा? तुम रावण की गोद से उतर कर आई हुई नारी हो। तुमने रावण की आँखों को अपने सौंदर्य से आनंदित किया है। उत्तम वंश में जन्म धारण करके उस वंश का यश बढ़ानेवाला मैं तुम्हें कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? तुम्हारे प्रति मेरे मन में थोड़ा भी प्रेम या मोह नहीं है। तुम जहाँ चाहो, जाओ। मैं सोच-समझ कर ये वचन कह रहा हूँ। यदि तुम चाहो तो अपनी जीविका चलाने के लिए लक्ष्मण या भरत के पास रह सकती हो। या सुग्रीव या विभीषण के पास रहो। तुम जहाँ अपने लिए सुख की बात मानोगी, वहीं पर रहो। तुम अद्भुत सौंदर्यवती हो। सुगठित शरीरवाली हो। ऐसी नारी का असहाय बनकर महाबली रावण के घर अकेली रहने पर क्या वह चुप रह सकता था?"

सीताजी ने कभी ऐसी बातें अन्यों से या रामचन्द्रजी के मुँह से नहीं सुनीं थीं, आज अपने ही पति के मुँह से जो भी अनेक वर्षों तक यम यातनाएँ भोग कर प्रिय बचन सुनने की उत्सुकता में रहनेवाली सीताजी ऐसी कठोर बातें सुन तलवार से कटी लता की भांति कांप उठीं और अविरल रूप से अश्रुधारा गिराने लगीं।

बाबर– उसका दुश्मन

भारत के इतिहास में बाबर (बाबर का अर्थ सिंह) के नाम से प्रसिद्ध जहीरुद्दीन मुहम्मद मध्य एशिया के फर्गाना का बादशाह था। वह अपनी ग्यारह साल की उम्र में ही गद्दी पर बैठा। एक बार वह समर्खण्ड नगर पर हमला करने गया। उस वक्त दुश्मन ने फर्गाना पर अधिकार कर लिया।

अपने राज्य को खोकर बाबर थोड़ी फ़ौज के साथ निकल पड़ा और काबूल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ के निमंत्रण पर वह हिन्दुस्तान पर हमला कर बैठा। उस वक्त उसके सैनिक बारह हज़ार मात्र थे, लेकिन उसके पास शक्तिशाली तोपें थीं।
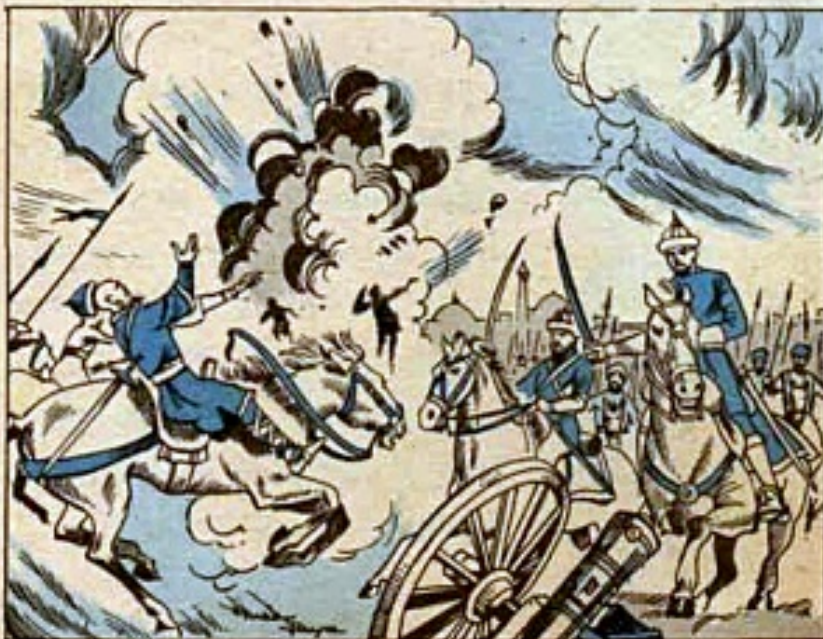
ई. सन् १५२६ को बाबर ने पानीपत के पास उस समय के दिल्ली के सुलतान इब्राहीम लोदी का सामना किया। सुलतान की फ़ौज एक लाख की थी। लेकिन उसके सैनिकों में अनुशासन का अभाव था। सुलतान हिम्मतवर जरूर था, पर उसमें युद्ध-कुशलता न थी।
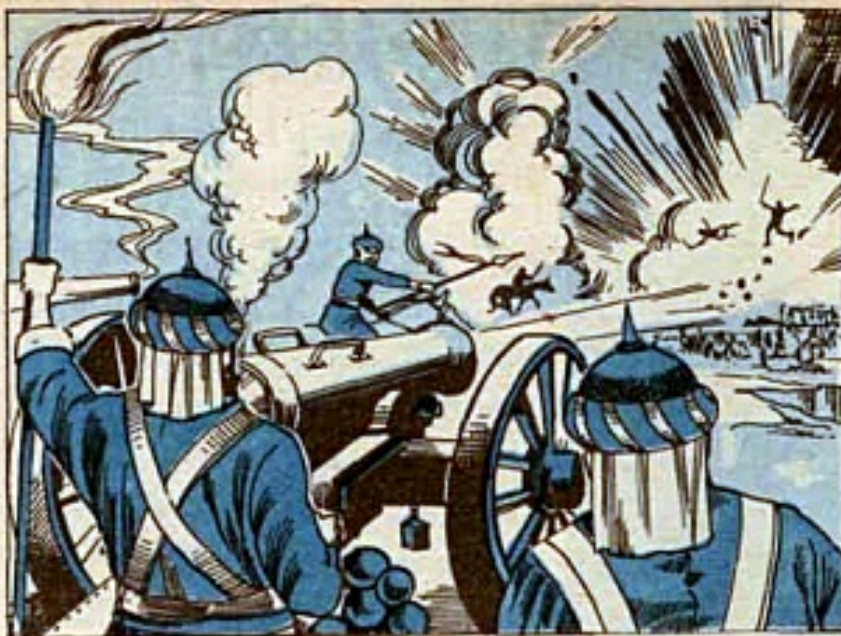
बाबर न केवल हिम्मतवर था, बल्कि चालाक भी था। उसने अपनी तोपों के गर्जन से दुश्मन के सैनिकों को थर्रा दिया। सुलतान इब्राहीम लोदी के सामंतों ने ऐन वक्त पर उसकी बिलकुल मदद न दी।

सुलतान ने जी-जान से युद्ध किया, अंत में वीरतापूर्वक लड़ते-लड़ते अपने प्राणों की आहुति दी। उसके सेनापतियों में एक राजपूत युवक था। उसने अपने बादशाह इब्राहीम लोदी की मृत्यु का प्रतीकार करने का प्रण किया।
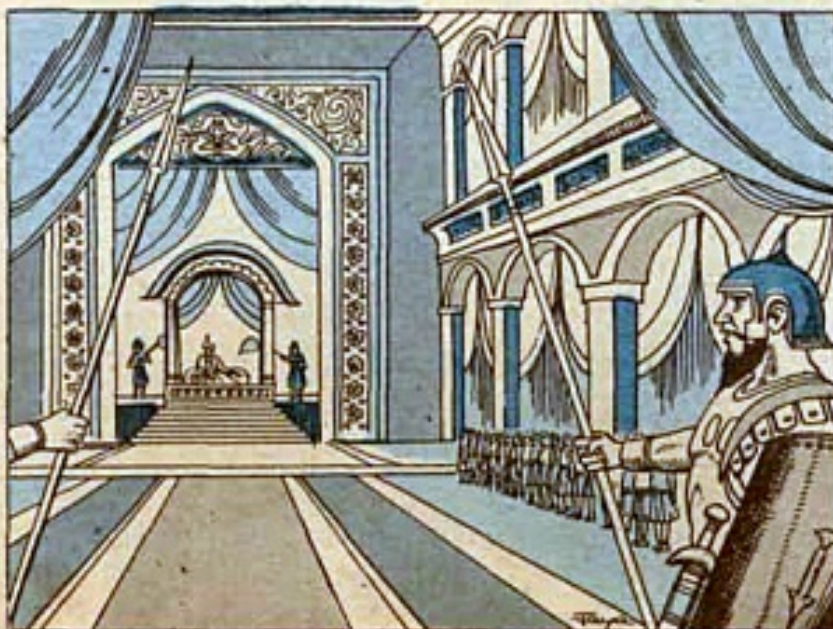
बाबर ने दिल्ली तथा आगरा नगरों को वश में कर लिया। अब वह लोदी के संपूर्ण राज्य का अधिपति था। बाबर का पिता तुरुष्क वंश का था, पर उसकी माँ मंगोल राज परिवार की नारी थी। इसलिए बाबर मुगल वंश का माना गया। विजय के बाद बाबर ने आगरा नगर को अपनी राजधानी बनाया।

उधर राजपूत युवक बाबर से बदला लेने का प्रयत्न करने लगा। बाबर के साथ हमेशा उसके अंगरक्षक हुआ करते थे। थोड़े दिन बाद राजपूत युवक ने बाबर के बारे में एक गुप्त समाचार जान लिया। बाबर सप्ताह में एक बार वेष बदलकर नगर के सभी प्रदेशों में घूमा करता था।
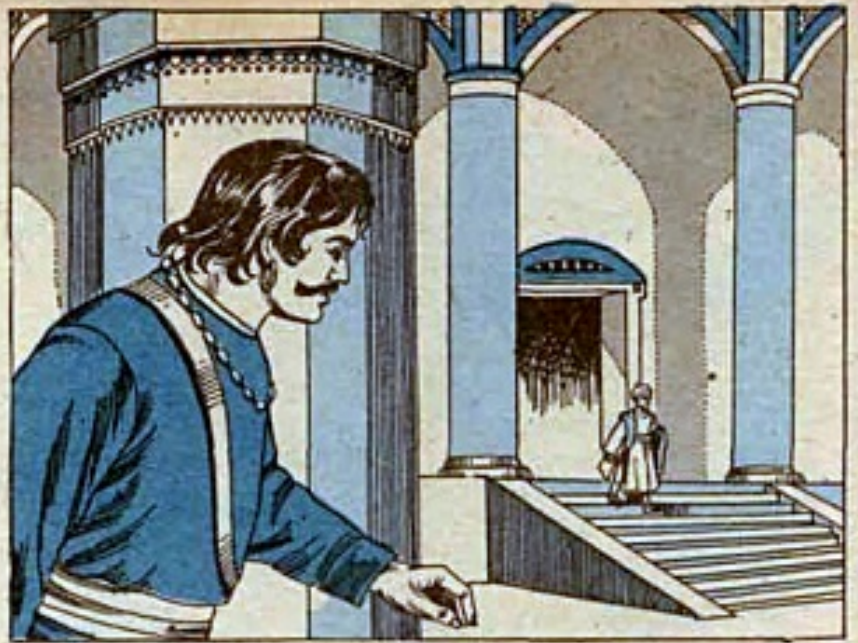
एक दिन राजपूत युवक ने दूसरे वेष में स्थित बाबर के निकट जाकर पूछा—"महाशय, इस गली के पीछे स्थिर पगडंडी के किनारे मेरा बोरा है। उसे उठाने में क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?" युवक की योजना थी कि बोरा उठाते वक्त बाबर की छाती में छुरी भोंककर उसे मार डाला जाय।

बाबर ने युवक की बात मान ली और राजपूत युवक के साथ झाड़ी तक पहुँचा। युवक उस पर छुरी चलाने के लिए अपनी कमर में से कटार निकालने ही जा रहा था कि प्रधान मार्ग की ओर से हाथी का चीत्कार तथा लोगों के हाहाकार सुनाई दिये।

बाबर बिजली की तेजी के साथ भीड़ के बीच आ धमका, एक बालक को एक मत्त हाथी कुचलने जा रहा था। तब बाबर ने झट से उस बालक को उठाया और दूर जाकर खड़ा हो गया।

बालक के माता-पिता और अन्य लोगों ने बाबर को घेरकर अनेक प्रकार से उसकी तारीफ़ की। बाबर ने उस बालक को उसके माँ-बाप के हाथ सौंप दिया और राजपूत युवक की मदद करने के लिए झाड़ी के निकट पहुँचा।

इस पर वह युवक बोला—"मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं? मैं अपने बादशाह की मौत का आप से बदला लेना चाहता था, लेकिन आप एक बालक को बचाने के लिए अपने प्राण तक देने को तैयार हो गये। आप एक महान व्यक्ति हैं।" बाबर ने हँसकर कहा—"भाई, तुम मुझसे भी बढ़कर महान हो! इसलिए तुम अपने अपराध को हिम्मत के साथ प्रकट कर सके! आज से हम दोनों मित्र हैं।"

बाबर बिजली की तेजी के साथ भीड़ के बीच आ धमका, एक बालक को एक मत्त हाथी कुचलने जा रहा था। तब बाबर ने झट से उस बालक को उठाया और दूर जाकर खड़ा हो गया।

बालक के माता-पिता और अन्य लोगों ने बाबर को घेरकर अनेक प्रकार से उसकी तारीफ़ की। बाबर ने उस बालक को उसके माँ-बाप के हाथ सौंप दिया और राजपूत युवक की मदद करने के लिए झाड़ी के निकट पहुँचा।

इस पर वह युवक बोला–"मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं? मैं अपने बादशाह की मौत का आप से बदला लेना चाहता था, लेकिन आप एक बालक को बचाने के लिए अपने प्राण तक देने को तैयार हो गये। आप एक महान व्यक्ति हैं।" बाबर ने हँसकर कहा–"भाई, तुम मुझसे भी बढ़कर महान हो! इसलिए तुम अपने अपराध को हिम्मत के साथ प्रकट कर सके! आज से हम दोनों मित्र हैं।"

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

एक दरबारी कवि के सोमशेखर नामक एक पुत्र था। वह बड़ा ही अक़्लमंद था। इस कारण छोटी अवस्था में ही वह एक अच्छा पंडित बन बैठा। एक दिन उसने देखा कि दो योद्धा खड्ग युद्ध कर रहे हैं; वह उस युद्ध को देख अत्यंत प्रभावित हुआ। उसने सोचा कि शुष्क पांडित्य की अपेक्षा खड्ग युद्ध में पौरुष और पराक्रम भरे हुए हैं, फिर क्या था, इस विचार के आते ही उसने राजा की अनुमति लेकर सेनापति के पर्यवेक्षण में खड्ग विद्या सीखी और उस कला में भी उसने अच्छी कुशलता प्राप्त की।

उन्हीं दिनों में राज्य की सीमा पर जंगली लोगों ने विद्रोह मचाया। इस पर सेनापति उन्हें दबाने के लिए सोमशेखर को अपने साथ ले गया। सोमशेखर ने उस समय तक कभी युद्ध न देखा था।

उस युद्ध में दोनों दलों के कई लोग मारे गये। कई घायल हो गये। उस भयंकर दृश्य को देख सोमशेखर बेहोश हो गया।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर, निम्न लिखित पते पर भेजें—"कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता", चन्दामामा २ & ३, आर्काट रोड, मद्रास-६०००२६

कार्ड हमें अक्तूबर १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँ न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के दिसम्बर '७७ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

अगस्त मास की प्रतियोगिता का परिणाम : "तर्क की ढाल"

पुरस्कृत व्यक्ति: कु. जयासिंह, द्वारा श्री राज किशोर सिंह, ५५२. के. यल. कीडगंज, इलाहाबाद-३

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसंबर १९७७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

D. N. Shirke

★

A. L. Syed

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ अक्तूबर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अगस्त के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : उम्र की उमंग !

द्वितीय फोटो : अंग अंग में तरंग !!

प्रेषक: रेणु अग्रवाल, बी. ५७. एस. पी. एम. कॉलोनी, सिरपूर, कागज नगर (आ. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

माँ के प्यार के बाद !

हमदर्द ग्राइप वाटर । आप के प्यार की तरह कुदरती । इसमें पांच प्राकृतिक द्रव्य सम्मिलित हैं जो आपके बच्चे की कोमल पाचन क्रिया को ठीक करते हैं और पेट की खराबी, दर्द, अफ़ारा और दस्तों में आराम देते हैं ।

HT-HGW-3707 A H

लोटपोट पढ़िये

और
हंसते हंसते
लोटपोट
हो जाइये

लोटपोट साप्ताहिक
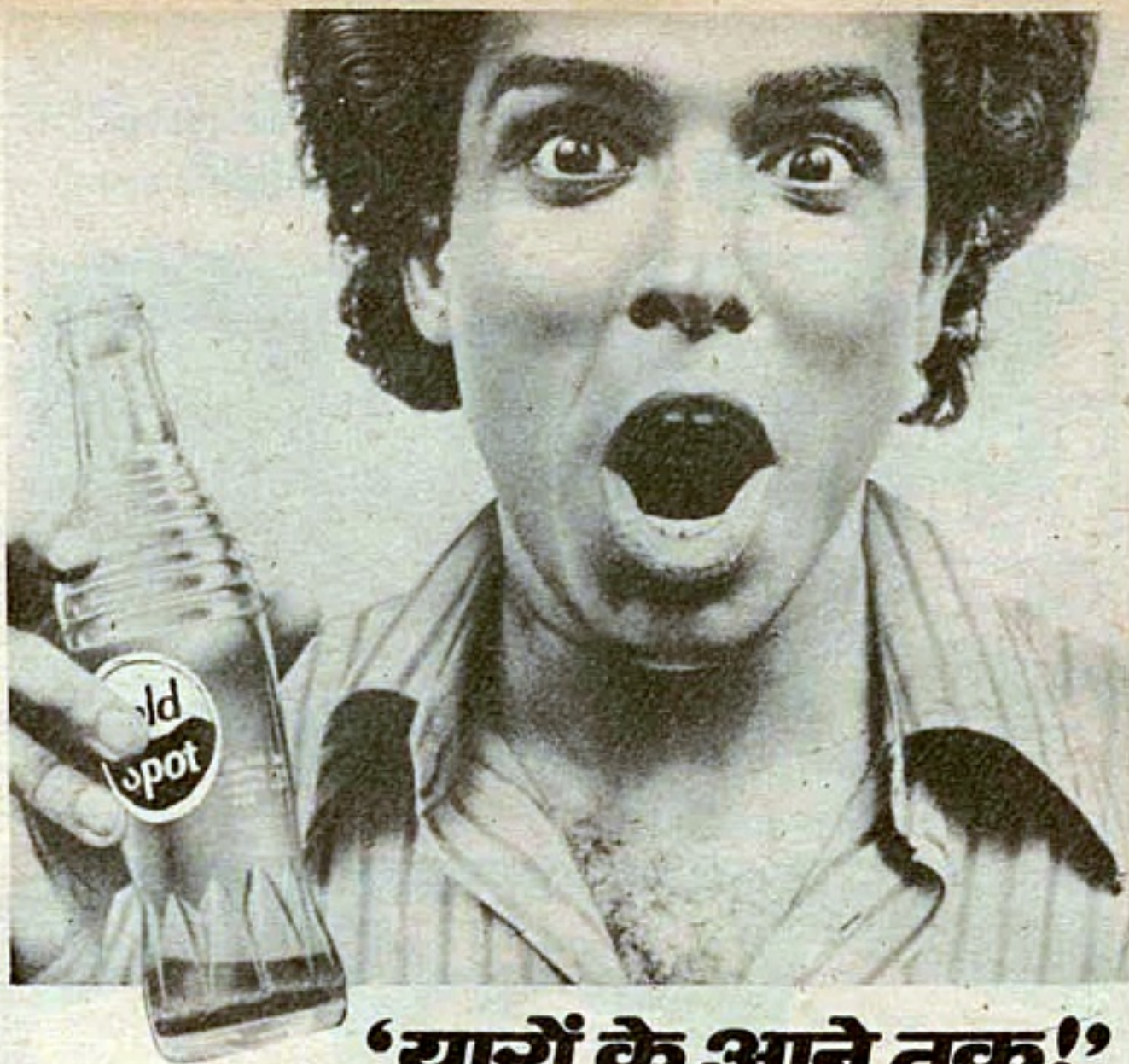
चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

'बैंक' उसे कहते हैं, जहाँ तुम्हारा पैसा रखा जाता है। यहाँ तुम्हारा पैसा न केवल सुरक्षित ही रहता है बल्कि यह बढ़ता भी रहता है।
तो क्या मेरा भी पैसा बढ़ जायेगा ?
हाँ, हाँ! क्यों नहीं!

यूको बैंक छात्र बचत योजना
और यह योजना तो आप जैसे बच्चों के लिए ही है। आज से ही छात्र बचत योजना में बचत करना शुरू कर दो।
समझ गया! मैं इसमें पैसा जरूर जमा करूँगा और फिर एक दिन.....
हम अपनी मनचाही वस्तुएँ खरीद सकेंगे।
मैं एक घड़ी खरीदूँगा
और मैं एक साइकिल
एक बात और। बैंक से तुम्हारा रुपया कभी चोरी नहीं जायेगा।
उनके यहाँ चोरी हो गई थी।
कितना अच्छा होता यदि मेरे चाचाजी भी यह सब जानते
कोई बात नहीं, अब सही। उन्हें आज ही बैंक में खाता खोलने की सलाह दो।

आपका मित्रवत् और सुविधाजनक यूको बैंक आपके पास-पड़ोस में ही है, और साथ ही आपकी मदद के लिए यह हमेशा तैयार भी है।

क्या आप बैंक के बारे में कुछ और भी बता सकेंगे ?
यह पुस्तक आप देख रहे हैं न ?

क्रमशः